सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मार्च 2022

भारत ने छुआ अभूतपूर्व निर्यात शिखर

$400 बिलियन के साथ

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का संदेश (हिंदी) 01

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 15

2.1 मेक इन इंडिया से मेक फॉर वर्ल्ड : 'आत्मनिर्भर भारत' निर्यात के एक नए शिखर पर 17

2.1.1 भारत के विकास को तेज गति देता निर्यात : बाबा कल्याणी का लेख 23

2.2 छोटे उद्यमियों के साथ आगे बढ़ता देश – Government e-Marketplace 25

2.3 आयुष स्टार्ट-अप्स : पुरातन ज्ञान से आधुनिकीकरण की गंगा 31

2.4 स्वच्छता मिशन : अपशिष्ट मुक्त राष्ट्र, उन्नयन के सार्वजनिक प्रयास 37

2.5 जल संरक्षण : जीवन रक्षण 42

2.6 पश्चिमी तट पर चमकता पूर्वोत्तर का सूर्य : माधवपुर का मेला 49

2.7 बिप्लबी भारत : स्वतंत्रता के नायकों को नमन 54

03 प्रतिक्रियाएँ 59

मेरे प्यारे देशवासियों

बीते सप्ताह हमने एक ऐसी उपलब्धि हासिल की, जिसने हम सबको गर्व से भर दिया। आपने सुना होगा कि भारत ने पिछले सप्ताह 400 बिलियन डॉलर, यानी, 30 लाख करोड़ रुपये के export का target हासिल किया है। पहली बार सुनने में लगता है कि ये अर्थव्यवस्था से जुड़ी बात है, लेकिन ये, अर्थव्यवस्था से भी ज्यादा, भारत के सामर्थ्य, भारत के potential से जुड़ी बात है। एक समय में भारत से export का आँकड़ा कभी 100 बिलियन, कभी डेढ़-सौ बिलियन, कभी 200 सौ बिलियन तक हुआ करता था, अब आज, भारत 400 बिलियन डॉलर पर पहुँच गया है। इसका एक मतलब ये कि दुनिया भर में भारत में बनी चीज़ों की demand बढ़ रही है, दूसरा मतलब ये कि भारत की supply chain दिनों-दिन और मजबूत हो रही है और इसका एक बहुत बड़ा सन्देश भी है। देश विराट कदम तब उठाता है जब सपनों से बड़े संकल्प होते हैं। जब संकल्पों के लिये दिन-रात ईमानदारी से प्रयास होता है, तो वो संकल्प, सिद्ध भी होते हैं, और आप देखिये, किसी व्यक्ति के जीवन में भी तो ऐसा ही होता है। जब किसी के संकल्प, उसके प्रयास, उसके सपनों से भी बड़े हो जाते हैं तो सफलता उसके पास खुद चलकर आती है।

साथियों,

देश के कोने-कोने से नए-नए product जब विदेश जा रहे हैं। असम के हैलाकांडी के लेदर प्रोडक्ट (leather product) हों या उस्मानाबाद के handloom product, बीजापुर की फल-सब्जियाँ हों या चंदौली का black rice, सबका export बढ़ रहा है। अब, आपको लद्दाख की विश्वप्रसिद्ध एप्रिकोट (apricot) दुबई में भी मिलेगी और सउदी अरब में तमिलनाडु से भेजे गए केले मिलेंगे। अब सबसे बड़ी बात ये कि नए-नए products, नए-नए देशों को भेजे जा रहे हैं। जैसे हिमाचल, उत्तराखण्ड में पैदा हुए मिलेट्स(millets)मोटे अनाज की पहली खेप डेनमार्क को निर्यात की गयी। आंध्र प्रदेश के कृष्णा और चित्तूर जिले के बंगनपल्ली और सुवर्णरेखा आम, दक्षिण कोरिया को निर्यात किये गए। त्रिपुरा से ताजा कटहल, हवाई रास्ते से, लंदन निर्यात किये गए और तो और पहली बार नागालैंड की राजा मिर्च को लंदन भेजा गया।

इसी तरह भालिया गेहूँ की पहली खेप, गुजरात से Kenya और Sri Lanka निर्यात की गयी। यानी, अब आप दूसरे देशों में जाएंगे, तो Made in India products पहले की तुलना में कहीं ज्यादा नज़र आएँगे।

साथियो, यह list बहुत लम्बी है और जितनी लम्बी ये list है, उतनी ही बड़ी Make in India की ताकत है, उतना ही विराट भारत का सामर्थ्य है, और सामर्थ्य का आधार है – **हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारे बुनकर, हमारे इंजीनियर, हमारे लघु उद्यमी, हमारा MSME Sector, ढ़ेर सारे अलग-अलग profession के लोग, ये सब इसकी सच्ची ताकत हैं। इनकी मेहनत से ही 400 बिलियन डॉलर के export का लक्ष्य प्राप्त हो सका है** और मुझे खुशी है कि भारत के लोगों का ये सामर्थ्य अब दुनिया के कोने-कोने में, नए बाजारों में पहुँच रहा है। जब एक-एक भारतवासी local के लिए vocal होता है, तब, local को global होते देर नहीं लगती है। आइये, local को global बनाएँ और हमारे उत्पादों की प्रतिष्ठा को और बढ़ायें।

साथियों,

'मन की बात' के श्रोताओं को यह जानकर अच्छा लगेगा कि घरेलू स्तर पर भी हमारे लघु उद्यमियों की सफलता हमें गर्व से भरने वाली है। आज हमारे लघु उद्यमी सरकारी खरीद में Government e-Market place यानी GeM के माध्यम से बड़ी भागीदारी निभा रहे हैं। Technology के माध्यम से बहुत ही transparent व्यवस्था विकसित की गयी है। पिछले एक साल में GeM portal के जरिए, सरकार ने एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की चीजें खरीदी हैं। देश के कोने-कोने से करीब-करीब सवा-लाख लघु उद्यमियों, छोटे दुकानदारों ने अपना सामान सरकार को सीधे बेचा है।

एक ज़माना था जब बड़ी कम्पनियाँ ही सरकार को सामान बेच पाती थीं। **लेकिन अब देश बदल रहा है, पुरानी व्यवस्थाएँ भी बदल रही हैं। अब छोटे से छोटा दुकानदार भी GeM Portal पर सरकार को अपना सामान बेच सकता है – यही तो नया भारत है। ये न केवल बड़े सपने देखता है, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुँचने का साहस भी दिखाता है, जहाँ पहले कोई नहीं पहुँचा है। इसी साहस के दम पर हम सभी भारतीय मिलकर आत्मनिर्भर भारत का सपना भी जरूर पूरा करेंगे।**

मेरे प्यारे देशवासियों,

हाल ही में हुए पद्म सम्मान समारोह में आपने बाबा शिवानंद जी को जरूर देखा होगा। 126 साल के बुजुर्ग की फुर्ती देखकर मेरी तरह हर कोई हैरान हो गया होगा और मैंने देखा, पलक झपकते ही, वो नंदी मुद्रा में प्रणाम करने लगे। मैंने भी बाबा शिवानंद जी को झुककर बार-बार प्रणाम किया। 126 वर्ष की आयु और बाबा शिवानंद की Fitness, दोनों, आज देश में चर्चा का विषय है।

मैंने Social Media पर कई लोगों का comment देखा, कि बाबा शिवानंद अपनी उम्र से चार गुना कम आयु से भी ज्यादा fit हैं। वाकई, बाबा शिवानंद का जीवन हम सभी को प्रेरित करने वाला है। मैं उनकी दीर्घ आयु की कामना करता हूँ। उनमें योग के प्रति एक Passion है और वे बहुत Healthy Lifestyle जीते हैं।

जीवेम शरदः शतम्।

हमारी संस्कृति में सबको सौ-वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएँ दी जाती हैं। हम 7 अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएँगे। आज पूरे विश्व में health को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। अभी आपने देखा होगा कि पिछले ही सप्ताह कतर में एक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 114 देशों के नागरिकों ने हिस्सा लेकर एक नया World Record बना दिया। इसी तरह से Ayush Industry का बाजार भी लगातार बड़ा हो रहा है। 6 साल पहले आयुर्वेद से जुड़ी दवाइयों का बाजार 22 हजार करोड़ रुपये के आसपास का था। आज Ayush Manufacturing Industry, एक लाख चालीस हजार करोड़ रुपये के आसपास पहुँच रही है, यानि इस क्षेत्र में संभावनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। Start-Up World में भी आयुष, आकर्षण का विषय बनता जा रहा है।

साथियो, Health Sector के दूसरे Start-Ups पर तो मैं पहले भी कई बार बात कर चुका हूँ, लेकिन इस बार Ayush Start-Ups पर आपसे विशेष तौर पर बात करूँगा।

एक Start-Up है Kapiva ! (कपिवा)। इसके नाम में ही इसका मतलब छिपा है। इसमें Ka का मतलब है- कफ, Pi का मतलब है- पित्त और Va का मतलब है- वात। यह Start-Up हमारी परम्पराओं के मुताबिक Healthy Eating Habits पर आधारित है। एक और Start-Up, निरोग-स्ट्रीट भी है , Ayurveda Healthcare Ecosystem में एक अनूठा Concept है। इसका Technology-driven Platform, दुनिया-भर के Ayurveda Doctors को सीधे लोगों से जोड़ता है। 50 हजार से अधिक Practitioners इससे जुड़े हुए हैं। इसी तरह, Atreya (आत्रेय) Innovations, एक Healthcare Technology Start-Ups है, जो Holistic Wellness के क्षेत्र में काम कर रहा है। Ixoreal (इक्जोरियल) ने न केवल अश्वगंधा के उपयोग को लेकर जागरूकता फैलाई है, बल्कि Top-Quality Production Process पर भी बड़ी मात्रा में निवेश किया है। Cureveda (क्योरवेदा) ने जड़ी-बूटियों के आधुनिक शोध और पारंपरिक ज्ञान के संगम से Holistic Life के लिए Dietary Supplements का निर्माण किया है।

साथियों, अभी तो मैंने कुछ ही नाम गिनाए हैं, ये लिस्ट बहुत लंबी है। ये भारत के युवा उद्यमियों और भारत में बन रही नई संभावनाओं का प्रतीक है। **मेरा Health Sector के Start-Ups और विशेषकर Ayush Start-Ups से एक आग्रह भी है। आप Online जो भी Portal बनाते हैं, जो भी Content create करते हैं, वो संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं में भी बनाने का प्रयास करें। दुनिया में बहुत सारे ऐसे देश हैं जहाँ अंग्रेजी न इतनी बोली जाती है और ना ही इतनी समझी जाती है। ऐसे देशों को भी ध्यान में रखकर अपनी जानकारी का प्रचार-प्रसार करें। मुझे विश्वास है, भारत के Ayush Start-Ups बेहतर Quality के Products के साथ, जल्द ही दुनिया भर में छा जायेंगे।**

साथियों, स्वास्थ्य का सीधा संबंध स्वच्छता से भी जुड़ा है। 'मन की बात' में, हम हमेशा स्वच्छता के आग्रहियों के प्रयासों को जरूर बताते हैं। ऐसे ही एक स्वच्छाग्रही हैं चंद्रकिशोर पाटिल जी। ये महाराष्ट्र में नासिक में रहते हैं। चंद्रकिशोर जी का स्वच्छता को लेकर संकल्प बहुत गहरा है। वो गोदावरी नदी के पास खड़े रहते हैं, और लोगों को लगातार नदी में कूड़ा-कचरा न फेंकने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हें कोई ऐसा करता दिखता है, तो तुरंत उसे मना करते हैं। इस काम में चंद्रकिशोर जी अपना काफी समय खर्च करते हैं। शाम तक उनके पास ऐसी चीजों का ढेर लग जाता है, जो लोग नदी में फेंकने के लिए लाए होते हैं। चंद्रकिशोर जी का ये प्रयास जागरूकता भी बढ़ाता है, और प्रेरणा भी देता है।

इसी तरह, एक और स्वच्छाग्रही हैं – उड़ीसा में पुरी के राहुल महाराणा। राहुल हर रविवार को सुबह-सुबह पुरी में तीर्थ स्थलों के पास जाते हैं, और वहाँ plastic कचरा साफ करते हैं। वो अब तक सैकड़ों किलो plastic कचरा और गंदगी साफ कर चुके हैं। पुरी के राहुल हों या नासिक के चंद्रकिशोर, ये हम सबको बहुत कुछ सिखाते हैं। **नागरिक के तौर पर हम अपने कर्तव्यों को निभाएं, चाहे स्वच्छता हो, पोषण हो, या फिर टीकाकरण, इन सारे प्रयासों से भी स्वस्थ रहने में मदद मिलती है।**

मेरे प्यारे देशवासियों,

आइये बात करते हैं केरल के मुपट्टम श्री नारायणन जी की। उन्होंने एक project के शुरुआत की है जिसका नाम है – 'Pots for water of life'. आप जब इस project के बारे में जानेंगे तो सोचेंगे कि क्या कमाल का काम है।

साथियों, मुपट्टम श्री नारायणन जी, गर्मी के दौरान पशु-पक्षियों को पानी की दिक्कत ना हो, इसके लिए मिट्टी के बर्तन बांटने का अभियान चला रहे हैं। गर्मियों में वो पशु-पक्षियों की इस परेशानी को देखकर खुद भी परेशान हो उठते थे। फिर उन्होंने सोचा कि क्यों ना वो खुद ही मिट्टी के बर्तन बाँटने शुरू कर दें ताकि दूसरों के पास उन बर्तनों में सिर्फ पानी भरने का ही काम रहे।

आप हैरान रह जाएँगे कि नारायणन जी द्वारा बाँटे गए बर्तनों का आँकड़ा एक लाख को पार करने जा रहा है। अपने अभियान में एक लाखवां बर्तन वो गांधी जी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम में दान करेंगे। आज जब गर्मी के मौसम ने दस्तक दे दी है, तो नारायणन जी का यह काम हम सब को ज़रूर प्रेरित करेगा और हम भी इस गर्मी में हमारे पशु-पक्षी मित्रों के लिए पानी की व्यवस्था करेंगे।

साथियों, मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से भी आग्रह करूँगा कि हम अपने संकल्पों को फिर से दोहराएं। पानी की एक-एक बूँद बचाने के लिए हम जो भी कुछ कर सकते हैं, वो हमें जरूर करना चाहिए। इसके अलावा पानी की Recycling पर भी हमें उतना ही जोर देते रहना है। घर में इस्तेमाल किया हुआ जो पानी गमलों में काम आ सकता है, Gardening में काम आ सकता है, वो जरूर दोबारा इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

थोड़े से प्रयास से आप अपने घर में ऐसी व्यवस्थाएं बना सकते हैं। रहीमदास जी सदियों पहले, कुछ मकसद से ही कहकर गए हैं कि 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून'। और पानी बचाने के इस काम में मुझे बच्चों से बहुत उम्मीद है। स्वच्छता को जैसे हमारे बच्चों ने आंदोलन बनाया, वैसे ही वो 'Water Warrior' बनकर, पानी बचाने में मदद कर सकते हैं।

साथियों, हमारे देश में जल संरक्षण, जल स्रोतों की सुरक्षा, सदियों से समाज के स्वभाव का हिस्सा रहा है। मुझे खुशी है कि देश में बहुत से लोगों ने Water Conservation को life mission ही बना दिया है। जैसे चेन्नई के एक साथी हैं अरुण कृष्णमूर्ति जी ! अरुण जी अपने इलाके में तालाबों और झीलों को साफ करने का अभियान चला रहे हैं। उन्होंने 150 से ज्यादा तालाबों-झीलों की साफ-सफाई की जिम्मेदारी उठाई और उसे सफलता के साथ पूरा किया। इसी तरह, महाराष्ट्र के एक साथी रोहन काले हैं। रोहन पेशे से एक HR Professional हैं। वो महाराष्ट्र के सैकड़ों Stepwells यानी सीढ़ी वाले पुराने कुओं के संरक्षण की मुहिम चला रहे हैं। इनमें से कई कुएं तो सैकड़ों साल पुराने होते हैं, और हमारी विरासत का हिस्सा होते हैं। सिकंदराबाद में बंसीलाल-पेट कुआँ एक ऐसा ही Stepwell है। बरसों की उपेक्षा के कारण ये stepwell मिट्टी और कचरे से ढक गया था। लेकिन अब वहाँ इस stepwell को पुनर्जीवित करने का अभियान जनभागीदारी से शुरू हुआ है।

साथियो, मैं तो उस राज्य से आता हूँ, जहाँ पानी की हमेशा बहुत कमी रही है। गुजरात में इन Stepwells को वाव कहते हैं। गुजरात जैसे राज्य में वाव की बड़ी भूमिका रही है। इन कुओं या बावड़ियों के संरक्षण के लिए 'जल मंदिर योजना' ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। पूरे गुजरात में अनेकों बावड़ियों को पुनर्जीवित किया गया। इससे इन इलाकों में वाटर लेवेल(water level) को बढ़ाने में भी काफी मदद मिली। ऐसे ही अभियान आप भी स्थानीय स्तर पर चला सकते हैं। Check Dam बनाने हों, Rain Water Harvesting हो, इसमें Individual प्रयास भी अहम हैं और Collective Efforts भी जरूरी हैं। **जैसे आजादी के अमृत महोत्सव में हमारे देश के हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवर बनाए जा सकते हैं। कुछ पुराने सरोवरों को सुधारा जा सकता है, कुछ नए सरोवर बनाए जा सकते हैं। मुझे विश्वास है, आप इस दिशा में कुछ न कुछ प्रयास जरूर करेंगे।**

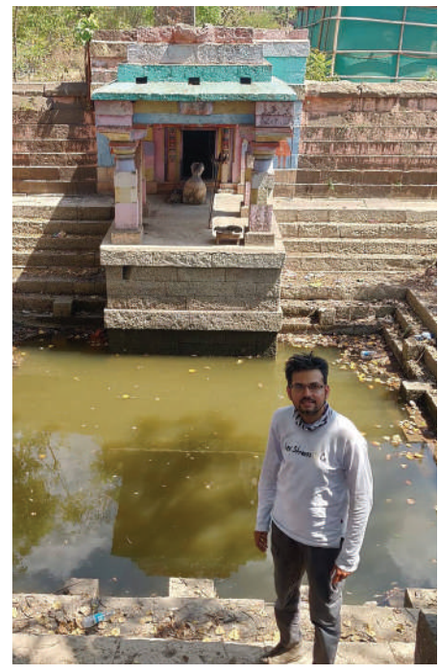

मेरे प्यारे देशवासियों, 'मन की बात' की एक खूबसूरती ये भी है कि मुझे आपके सन्देश बहुत सी भाषाओं, बहुत सी बोलियों में मिलते हैं। कई लोग MYGOV पर Audio message भी भेजते हैं। **भारत की संस्कृति, हमारी भाषाओं, हमारी बोलियाँ, हमारे रहन-सहन, खान-पान का विस्तार, ये सारी विविधताएँ हमारी बहुत बड़ी ताकत है। पूरब से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक भारत को यही विविधता, एक करके रखती हैं , एक भारत-श्रेष्ठ भारत बनाती हैं।** इसमें भी हमारे ऐतिहासिक स्थलों और पौराणिक कथाओं, दोनों का बहुत योगदान होता है। आप सोच रहे होंगे कि ये बात मैं अभी आपसे क्यों कर रहा हूँ। इसकी वजह है "माधवपुर मेला"।

माधवपुर मेला कहाँ लगता है, क्यों लगता है, कैसे ये भारत की विविधता से जुड़ा है, ये जानना मन की बात के श्रोताओं को बहुत Interesting लगेगा।

साथियों, "माधवपुर मेला" गुजरात के पोरबंदर में समुद्र के पास माधवपुर गाँव में लगता है। लेकिन इसका हिन्दुस्तान के पूर्वी छोर से भी नाता जुड़ता है। आप सोच रहे होंगें कि ऐसा कैसे संभव है ? तो इसका भी उत्तर एक पौराणिक कथा से ही मिलता है। कहा जाता है कि हजारों वर्ष पूर्व भगवान् श्री कृष्ण का विवाह, नॉर्थ ईस्ट की राजकुमारी रुक्मिणी से हुआ था। ये विवाह पोरबंदर के माधवपुर में संपन्न हुआ था और उसी विवाह के प्रतीक के रूप में आज भी वहां माधवपुर मेला लगता है।

East और West का ये गहरा नाता, हमारी धरोहर है। समय के साथ अब लोगों के प्रयास से, माधवपुर मेले में नई- नई चीजें भी जुड़ रही हैं। हमारे यहाँ कन्या पक्ष को घराती कहा जाता है और इस मेले में अब नॉर्थ ईस्ट से बहुत से घराती भी आने लगे हैं। एक सप्ताह तक चलने वाले माधवपुर मेले में नॉर्थ ईस्ट के सभी राज्यों के आर्टिस्ट (artist) पहुंचते हैं, हैंडीक्रॉफ्ट (handicraft) से जुड़े कलाकार पहुंचतें हैं और इस मेले की रौनक को चार चाँद लग जाते हैं। **एक सप्ताह तक भारत के पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों का ये मेल, ये माधवपुर मेला, एक भारत – श्रेष्ठ भारत की बहुत सुन्दर मिसाल बना रहा है। मेरा आपसे आग्रह है, आप भी इस मेले के बारे में पढ़ें और जानें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, देश में आज़ादी का अमृत महोत्सव, अब जन भागीदारी की नई मिसाल बन रहा है। कुछ दिन पहले 23 मार्च को शहीद दिवस पर देश के अलग–अलग कोने में अनेक समारोह हुए। देश ने अपनी आज़ादी के नायक- नायिकाओं को याद किया श्रद्धा पूर्वक याद किया। इसी दिन मुझे कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में बिप्लॉबी भारत गैलरी के लोकार्पण का भी अवसर मिला। **भारत के वीर क्रांतिकारियों को श्रद्धाँजली देने के लिए यह अपने आप में बहुत ही अनूठी गैलरी(gallery) है। यदि अवसर मिले, तो आप इसे देखने ज़रूर जाइयेगा।**

साथियों, अप्रैल के महीने में हम दो महान विभूतियों की जयंती भी मनायेंगे। इन दोनों ने ही भारतीय समाज पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है। ये महान विभूतियाँ हैं- महात्मा फुले और बाबा साहब अम्बेडकर। महात्मा फुले की जयंती 11 अप्रैल को है और बाबा साहब की जयंती हम 14 अप्रैल को मनाएंगे। इन दोनों ही महापुरुषों ने भेदभाव और असमानता के खिलाफ बड़ी लड़ाई लड़ी।

महात्मा फुले ने उस दौर में बेटियों के लिए स्कूल खोले, कन्या शिशु हत्या के खिलाफ आवाज़ उठाई। उन्होंने जल – संकट से मुक्ति दिलाने के लिए भी बड़े अभियान चलाये।

साथियों, महात्मा फुले की इस चर्चा में सावित्रीबाई फुले जी का भी उल्लेख उतना ही ज़रूरी है। सावित्रीबाई फुले ने कई सामाजिक संस्थाओं के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई। एक शिक्षिका और एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने समाज को जागरूक भी किया और उसका हौंसला भी बढाया।

दोनों ने साथ मिलकर सत्यशोधक समाज की स्थापना की। जन-जन के सशक्तिकरण के प्रयास किए। हमें बाबा साहब अम्बेडकर के कार्यों में भी महात्मा फुले के प्रभाव साफ़ दिखाई देते हैं। वो कहते भी थे कि किसी भी समाज के विकास का आकलन उस समाज में महिलाओं की स्थिति को देख कर किया जा सकता है। **महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन से प्रेरणा लेते हुए, मैं सभी माता –पिता और अभिभावकों से अनुरोध करता हूँ कि वे बेटियों को ज़रूर पढ़ायें। बेटियों का स्कूल में दाखिला बढ़ाने के लिए कुछ दिन पहले ही कन्या शिक्षा प्रवेश उत्सव भी शुरू किया गया है, जिन बेटियों की पढाई किसी वजह से छूट गई है, उन्हें दोबारा स्कूल लाने पर फोकस (focus) किया जा रहा है।**

साथियों, ये हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि हमें बाबासाहेब से जुड़े पंच तीर्थ के लिए कार्य करने का भी अवसर मिला है। उनका जन्म-स्थान महू हो, मुंबई में चैत्यभूमि हो, लंदन का उनका घर हो, नागपुर की दीक्षा भूमि हो, या दिल्ली में बाबासाहेब का महा-परिनिर्वाण स्थल, मुझे सभी जगहों पर, सभी तीर्थों पर जाने का सौभाग्य मिला है। **मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से आग्रह करूँगा कि वे महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले और बाबासाहेब अम्बेडकर से जुड़ी जगहों के दर्शन करने जरूर जाएँ। आपको वहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।**

मेरे प्यारे देशवासियों,

'मन की बात' में इस बार भी हमने अनेक विषयों पर बात की। अगले महीने बहुत से पर्व-त्योहार आ रहे हैं। कुछ दिन बाद ही नवरात्र है। नवरात्र में हम व्रत-उपवास, शक्ति की साधना करते हैं, शक्ति की पूजा करते हैं, यानी हमारी परम्पराएं हमें उल्लास भी सिखाती हैं और संयम भी। संयम और तप भी हमारे लिए पर्व ही है, इसलिए नवरात्र हमेशा से हम सभी के लिए बहुत विशेष रही है। नवरात्र के पहले ही दिन गुड़ी पड़वा का पर्व भी है। अप्रैल में ही Easter भी आता है और रमजान के पवित्र दिन भी शुरू हो रहे हैं। **हम सबको साथ लेकर अपने पर्व मनाएँ, भारत की विविधता को सशक्त करें, सबकी यही कामना है।** इस बार 'मन की बात' में इतना ही। अगले महीने आपसे नए विषयों के साथ फिर मुलाकात होगी।

बहुत-बहुत धन्यवाद !

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

मेक इन इंडिया से मेक फॉर वर्ल्ड

'आत्मनिर्भर भारत'

निर्यात के एक नए शिखर पर

"हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारे बुनकर, हमारे इंजीनियर, हमारे लघु उद्यमी, हमारा एमएसएमई सेक्टर, ढेर सारे अलग-अलग प्रोफेशन के लोग, ये सब इसकी सच्ची ताकत हैं। इनकी मेहनत से ही 400 बिलियन डॉलर के एक्सपोर्ट का लक्ष्य प्राप्त हो सका है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

भारत ने 2021-22 में 400 अरब अमेरिकी डॉलर का व्यापारिक निर्यात लक्ष्य हासिल किया है। स्थिति की समीक्षा और निगरानी में सरकार की सतत सहायता से व्यापार और उद्योग के मध्य विश्वास विकसित हुआ है, जिससे निर्यातकों और निर्माताओं को वर्ष 2021-22 में उच्च निर्यात वृद्धि को फिर से शुरू करने में काफी फायदा हुआ है।

प्रदीप मुल्तानी
पीएचडी चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स

प्रकृति के आशीर्वाद के बीच फला फूला है भारत।

भारत ने प्रकृति का हर रंग देखा है, यहाँ विश्व की सबसे समृद्ध धरती है और हैं हर तरफ फैली नदियाँ। यहाँ मौसम की हर करवट है और साथ ही है औषधियों और खनिजों की खान आदि।

इतने वैभिन्य के साथ उपलब्ध प्राकृतिक समृद्धि ही एक समय पर वैश्विक अर्थव्यवस्था में 21% से अधिक के योगदान के साथ हमें शीर्ष पर बनाये हुए थी।

अपनी उत्पादकता और प्रकृति के सहयोग के साथ जुड़कर भारत का पुरुषार्थ पुनः भारत को वैश्विक अर्थजगत में आगे लाने को तत्पर है और इसी कड़ी में हम पुनः वैश्विक निर्यात को बढ़ाकर 'आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्न को वास्तविकता के धरातल पर उतारते हुए 'वोकल फॉर लोकल' से 'लोकल फॉर ग्लोबल' की ओर बढ़ चले हैं।

भारत में वस्तु निर्यात ने पिछले माह ही एक नया शिखर छुआ है। गत वित्त वर्ष में अपने समेकित प्रयासों से भारत ने पहली बार 400 अरब डॉलर यानी 30 लाख करोड़ रुपये का आँकड़ा पार कर लिया है। हमारा पिछला सर्वश्रेष्ठ निर्यात प्रदर्शन 331.02 अरब डॉलर था जो 2018-19 में हासिल किया गया था। यह ध्यान रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि भारत से निर्यात की जाने वाली शीर्ष पाँच वस्तुएँ थीं - इंजीनियरिंग की वस्तुएं, पेट्रोलियम उत्पाद, रत्न और आभूषण, रसायन और सभी वस्त्र एवं उनसे तैयार परिधान।

मार्च, 2022 को प्रसारित मन की बात के अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि "हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारे बुनकर, हमारे इंजीनियर, हमारे लघु उद्यमी, हमारा एमएसएमई सेक्टर, ढेर सारे अलग-अलग प्रोफेशन के लोग, ये सब इसकी सच्ची ताकत हैं। इनकी मेहनत से ही 400 बिलियन डॉलर के एक्सपोर्ट का लक्ष्य प्राप्त हो सका है और मुझे खुशी है कि भारत के लोगों का ये सामर्थ्य अब दुनिया के कोने-कोने में, नए बाजारों में पहुँच रहा है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि "दुनियाभर में, भारत में बनी चीज़ों की डिमांड बढ़ रही है, दूसरा मतलब ये कि भारत की supply-chain दिनों-दिन और मजबूत हो रही है।"

यह वास्तव में वैश्विक मंच पर एक प्रतिस्पर्धी और लचीली अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत की यात्रा में एक मील का पत्थर है। बढ़ता निर्यात देश में व्यापारिक सहजता और हमारे उत्पादन एवं सेवाओं के दुनिया के सभी कोनों तक पहुँचने का एक सच्चा प्रतिबिंब है।

जुजर खोराकीवाला
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,
बायोस्टैड इंडिया लिमिटेड

2021-22 में 400 बिलियन डॉलर के निर्यात-लक्ष्य की ऐतिहासिक उपलब्धि राष्ट्र में अंतर्निहित निर्माणशक्ति, उद्यमशीलता और वैश्विक मांग के अनुरूप चपल उत्पादन को सशक्त रूप से प्रदर्शित करती है।

वीर एस. आडवाणी
उपाध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,
ब्लू स्टार लिमिटेड

'मेक इन इंडिया' उत्पाद देशभर यानी देश के दूर-दराज कोनों में स्थित उत्पादन केन्द्रों से प्राप्त होते हैं। चाहे वह असम के हैलाकांडी के लेदर प्रोडक्ट हों या उस्मानाबाद के हैंडलूम प्रोडक्ट, बीजापुर की फल-सब्जियाँ हों या चंदौली का ब्लैक-राइस, सबका एक्सपोर्ट बढ़ रहा है। अब आपको लद्दाख की विश्व-प्रसिद्ध एप्रिकोट दुबई में भी मिलेगी और सउदी अरब में तमिलनाडु से भेजे गए केले मिलेंगे। अब सबसे बड़ी बात यह है कि नए-नए प्रोडक्ट, नए-नए देशों को भेजे जा रहे हैं। जैसे हिमाचल, उत्तराखण्ड में पैदा हुए मिलेट्स, मोटे अनाज की पहली खेप डेनमार्क को निर्यात की गयी। आंध्र प्रदेश के कृष्णा और चित्तूर जिले के बंगनपल्ली और सुवर्णरेखा आम, दक्षिण कोरिया को निर्यात किये गए। त्रिपुरा से ताजे कटहल हवाई रास्ते से लन्दन निर्यात किये गए और तो और पहली बार नागालैंड की राजा मिर्च को लंदन भेजा गया। इसी तरह भालिया गेहूँ की पहली खेप गुजरात से केन्या और श्रीलंका निर्यात की गयी। यानी, अब आप दूसरे देशों में जाएंगे, तो मेड इन इंडिया प्रोडक्ट पहले की तुलना में कहीं ज्यादा नज़र आयेंगे।

सरकार उद्योगों और निर्यातकों के लिए उनके निर्यात प्रदर्शन में बढ़ोतरी के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने और एक सुदृढ़ बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रही है। एक सुनियोजित नीति का निर्माण किया गया है, जिसमें - देश, उत्पाद और EPC (Export Promotion Council), तीनों स्तर पर निरंतर निगरानी और सुधार के विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

इस विशाल निर्यात लक्ष्य की उपलब्धि को प्राप्त करने के लिये एवं निर्यात को बढ़ावा देने के लिये सरकार द्वारा बहुत से सुधार किए गए हैं। निर्यात उत्पादों पर करों में छूट और राज्य तथा केंद्रीय करों एवं लेवी की छूट को महामारी के बीच भी सुचारू रूप से जारी रखने के सरकार द्वारा दर्शाया गया दृढ़ संकल्प इस उपलब्धि की बड़ी वजह बना है। निर्यातकों और बड़ी सँख्या में लघु एवं मझोले निर्यातकों को लाभ देने के लिये बहुत सी योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है। जिससे हम ऐसे ही और विशाल निर्यात शिखर छू सकें।

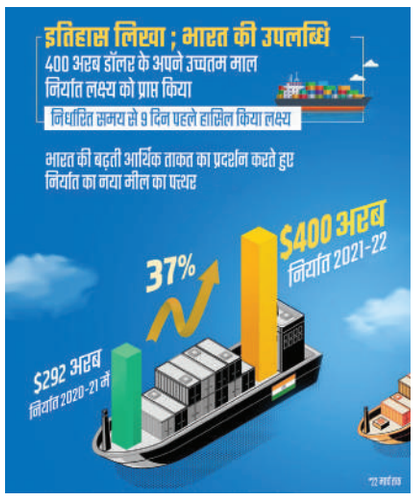

भारतीय निर्यात संगठन समूह के **महानिदेशक और सीईओ डॉ. अजय सहाय** का मानना है कि इस निर्यात प्रदर्शन की सबसे अच्छी बात इसका अत्यंत समावेशी होना है। किसानों, कारीगरों, शिल्पकारों, महिला उद्यमियों और छोटे उद्यमियों के योगदान ने निर्यात को और अधिक समावेशी बना दिया है।

हमने उत्पादों और बाजार दोनों में तेजी से वृद्धि देखी है, नए केन्द्र सामने आए हैं जो आने वाले समय में भारत का निर्यात बढ़ाने में मदद करेंगे। जिले को निर्यात केन्द्र के रूप में विकसित करने की नीति सभी जिलों को आगे लाने और भारत के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा प्रदान करके उनकी मदद करने के लिए उत्कृष्ट है।

कभी दुनिया के सबसे बड़े बाजार के रूप में जाना जाने वाला भारत अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के "मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड" के विज़न के कारण दुनिया के शीर्ष निर्यातक के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है।

आईआईएफटी के चेयरपर्सन प्रोफेसर राकेश मोहन जोशी बताते हैं कि भारत के व्यापार संवर्धन इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब वाणिज्य मन्त्रालय, भारत सरकार जमीनी स्तर पर गया है। ऐसा पहली बार हुआ है कि न केवल राज्यस्तरीय निर्यात प्रोत्साहन (एसएलईपी) समितियाँ, बल्कि मन्त्रालय जिला स्तर के निर्यात प्रोत्साहनों में भी गए हैं। राज्यों को अपनी प्रचार योजना तैयार करने के लिए कहा गया था, जबकि जिलों को उत्पादों की पहचान करने के लिए कहा गया था और उन उत्पादों को समग्र प्रचार योजना में एकीकृत किया गया था।

जनसांख्यिकीय लाभांश, लोकतांत्रिक प्रणाली और युवा एवं प्रतिभाशाली आबादी जैसे कई सकारात्मक कारकों के साथ, भारत उत्साहपूर्वक 'मेक इन इंडिया' को आगे बढ़ा रहा है। जब राष्ट्रीय सुरक्षा की बात आती है, तो आत्मनिर्भरता अनिवार्य है, हमें 'मेड इन इंडिया उत्पादों' पर गर्व होना चाहिए जो वैश्विक मानकों को बनाए रखते हैं और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करते हैं।

> यह पूरी तरह से माननीय प्रधानमंत्री की दूरदर्शी सोच और प्रतिबद्धता एवं सरकार द्वारा प्रदान किए गए उत्कृष्ट पारिस्थितिकी तंत्र के कारण सम्भव हो पाया है कि हम इस वर्ष 400 बिलियन डॉलर के व्यापारिक निर्यात के विशाल लक्ष्य तक पहुँचने में सक्षम हुए हैं।
>
> **डॉ. अजय सहाय**
> महानिदेशक और सीईओ,
> भारतीय निर्यात संगठन समूह

वैश्विक बाजार में चमकता भारत : निर्यात का विकास और हमारे प्रयास

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के मार्च 2022 के अपने संबोधन में भारत की निर्यात स्थिति में तीव्र गति से होती बढ़ोत्तरी और वैश्विक अर्थजगत में बढ़ते भारत के प्रभाव का वर्णन किया। भारत ने इस अभूतपूर्व निर्यात-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने क्षेत्रीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक आने के लिये प्रेरित किया है। "वोकल फॉर लोकल" से शुरू हुई ये यात्रा 'आत्मनिर्भर भारत' के पथ पर आगे बढ़ते हुए अब 'लोकल फॉर ग्लोबल' में परिवर्तित हो गई और इसी भावना के साथ हम इस एवरेस्ट सरीखे निर्यात शिखर पर पहुँचे हैं।

इसमें योगदान है हमारे छोटे उद्यमियों का जिनके प्रयासों और उत्पादों के साथ हम तेजी से अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पकड़ बना रहे हैं, इसीलिए दूरदर्शन ने महाभारतकालीन हस्तिनापुर यानी मेरठ में उद्यमियों से बात की और इस विषय पर उनकी राय जानी।

भारतीय उद्योग संघ-मेरठ के अध्यक्ष सुमनेश अग्रवाल प्रीमियर लेगगार्ड वर्क्स नामक कम्पनी चलाते हैं। उनका मानना है कि कोविड के समय आउटडोर स्पोर्ट्स में आई कमी अब पूरी हो रही है इसीलिए आने वाले समय में खेल सामग्री का निर्यात बढ़ेगा।

हिमको इण्टरनेशनल नामक कम्पनी के **निर्यात निदेशक अर्पण महाजन** इसके लिये सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए कहते हैं कि "एक जिला, एक उत्पाद" योजना के माध्यम से सरकार मेरठ में खेल उत्पादों के निर्माण का समर्थन कर रही है। सिंगल विंडो क्लीयरेंस से हमें उत्पादों के निर्माण और निर्यात में सहयोग बहुत सरलता से मिल जाता है। सरकार द्वारा लागू की गई इन अनुकूल नीतियों के कारण और 'खेलो इण्डिया' आंदोलन की ओर जोर देने से घरेलू स्तर पर खेल से सम्बन्धित उत्पादों की माँग भी पैदा हुई है और हम छोटे पैमाने पर फिटनेस और आउटडोर खेल वस्तुओं का निर्माण भी कर रहे हैं और उन्हें ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया सहित 10 से 12 देशों में निर्यात भी कर रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर बढ़ती लोकप्रियता और भारतीय उत्पादों की माँग के विषय में बताते हुए नेल्को इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड के **प्रबन्ध निदेशक अशोक आनन्द** बताते हैं कि हमारे देश के खेल उपकरण विश्व स्तर पर ओलम्पिक, राष्ट्रमण्डल खेलों जैसे आयोजनों में उपयोग किए जाते हैं।

हमारा प्रमुख निर्यात बाजार यूरोप, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, मलेशिया, हांगकांग है। फरवरी और मार्च 2022 में हमने पूर्व-कोविड बाजार का लगभग 65% हिस्सा कवर किया है। वे आशा जताते हैं कि निर्यातकों के लिए 2022-23 का यह समय सबसे अच्छा रहने वाला है।

इस विषय में बात करने पर मेरठ के **उद्योग उपायुक्त श्री वी.के. कौशल** बताते हैं कि एक जिला, एक उत्पाद योजना के तहत पिछले वित्तीय वर्ष में 700 करोड़ रुपये तक का निर्यात किया गया।

पिछले 3 वर्षों में 200% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। 2022 के लिए मेरठ ने 1000 करोड़ रुपये का शिखर छूने की ठानी है। एक जिला, एक उत्पाद योजना के तहत निर्माण इकाइयों को सभी ऋणों पर 25% अनुदान दिया जाता है। उद्योग में विशिष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को दो सप्ताह का कौशल प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। योजना के तहत बेहतर बाजार पहुँच प्रदान करने में भी मदद की जाती है। जिले में और उसके आसपास प्रदर्शनियों के आयोजन एवं उत्पाद को भारत में विभिन्न बन्दरगाहों तक ले जाने के लिए वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार एक सकारात्मक व्यापारिक माहौल बनाने के लिये प्रयासरत है और उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के लिये हर सम्भव सहायता प्रदान कर रही है। देश में उद्यमिता विकसित करने के सरकार के प्रयास अब रङ्ग ला रहे हैं।

भारत में बढ़ती उद्यमिता के साथ-साथ अपार सम्भावनाओं का जन्म हो रहा है जो भारत को दृढ़, सशक्त और आत्मनिर्भर बना रही हैं और "सबका साथ, सबका विकास' के साथ -साथ "सबका प्रयास" के माध्यम से भारत नए-नए अभूतपूर्व लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है।

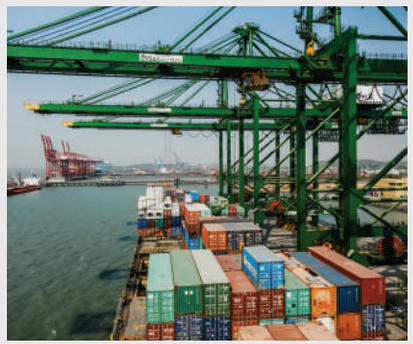

भारत के विकास को तेज गति देता निर्यात

बाबा कल्याणी
अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक,
भारत फोर्ज लिमिटेड

अगस्त 2021 में जब भारत कोविड महामारी की दूसरी लहर के प्रभाव से उबर रहा था। हम जैसे निर्यातक अस्थिर माँग और सेमीकंडक्टर की कमी के कारण वैश्विक मूल्य श्रृंखला में बहुत से व्यवधानों से जूझ रहे थे। इसी परिस्थिति में **माननीय प्रधानमंत्री ने दुनिया भर में निर्यातकों और भारतीय मिशनों के प्रमुखों के एक समूह को सम्बोधित करते हुए एक स्पष्ट आह्वान किया, 'लोकल गोज ग्लोबल - मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड' और वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए 400 अरब डॉलर के व्यापारिक निर्यात का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया।** तब हमने कल्पना भी नहीं की होगी कि भारत न केवल इस लक्ष्य को प्राप्त करेगा बल्कि प्रक्रिया के पैमाने पर नए बेंचमार्क बनायेगा, मौजूदा बाजारों में गहराई से प्रवेश करेगा, व्यापार के लिए नए रास्ते खोलेगा, मिशन मोड पर काम करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन करेगा और जनभागीदारी के साथ सफलता प्राप्त करेगा।

अब जब पहले देशव्यापी लॉकडाउन को दो साल हो गए हैं, **यह शानदार उपलब्धि इंजीनियरिंग वस्तुओं, मोबाइल फोन, परिधान, जैविक रसायन, कृषि-उत्पादों सहित कई क्षेत्रों में भारत की त्वरित विकास गति और बेहतर निर्यात प्रतिस्पर्धा को दर्शाती है।** भारत के सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात का योगदान लगभग 20% है, जो भारत के आर्थिक विकास का एक दुर्जेय स्तम्भ है और देश भर के लाखों परिवारों के लिए उच्च आय वाली आजीविका का साधन है।

भारत को सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बने रहने के लिए, गहन बाजार सम्बन्धों और उभरते वैश्विक मेगा-ट्रेंडों के साथ रणनीतिक संरूपता वाला एक व्यापक निर्यात क्षेत्र बनाना अनिवार्य है।

जुड़े हुए लागत लाभ और असाधारण मानवीय प्रतिभा के विशाल समूह का लाभ उठाते हुए, भारत को **'वैश्विक उत्पादन हब'** के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करनी होगी और एक उचित समय सीमा में 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापारिक निर्यात को प्राप्त करने की आकांक्षा रखनी होगी। **व्यापारिक निर्यात में ढाई गुना वृद्धि घरेलू निर्माण क्षेत्र में भी समान वृद्धि दर्ज करेगी जिससे उच्च आय वाले रोजगार के अवसरों और समावेशी विकास के लिए एक मञ्च प्रदान करके एक नए भारत की नींव मजबूत होगी।** 14 क्षेत्रों में **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनायें,** मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और बुनियादी ढाँचा प्रदान करने के लिए **पीएम गति शक्ति मिशन, निर्यात हब के रूप में जिलों** को बढ़ावा देना, भारत सरकार द्वारा माँग को पूरा करने की कई पहलों में से कुछ हैं, जिनका उद्देश्य लागत अक्षमताओं में सुधार और प्रभाव में भारत की समग्र निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है।

भारत एक प्रमुख वैश्विक निर्माण और निर्यात शक्ति के रूप में उभर रहा है, हम अपनी ब्रांड इक्विटी को और बढ़ाने के लिए भारतीय कम्पनियों की सफलताओं का प्रभावशाली रूप से लाभ उठा सकते हैं। **"मेक इन इंडिया" को सटीक गुणवत्ता, विश्वसनीयता, उत्कृष्ट नवाचार क्षमताओं, पर्यावरण के एक ईमानदार रक्षक और ग्राहक देखभाल और सेवा के लिए एक बेंचमार्क का प्रतीक बनना चाहिए। इसे हासिल करने के लिए सरकार और उद्योग जगत को मिलकर काम करना होगा।**

विशेष रूप से ऑटो और ऑटो पार्ट्स, फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, पेट्रो-रसायन जैसे क्षेत्रों से कई भारतीय कम्पनियों को आज वैश्विक नेतृत्वकर्ता तक माना जाता है। इन क्षेत्रों में भारत की स्थिति को और मजबूत करते हुए, **'ब्रांड इंडिया'** के निर्माण पर जोर देने से देश को नए अवसरों का पता लगाने और दुनिया भर में मौजूदा और नए बाजारों में बढ़ते मूल्य वाले उत्पादों के निर्यात के अवसर पैदा करने में मदद मिलेगी।

हम सभी को तेजी से आगे बढ़ते हुए अस्थिर और अनिश्चित भू-राजनीतिक और मैक्रो-इकनोमिक बाहरी वातावरण में परिवर्तन की आशा है। व्यक्तियों, समाजों, संगठनों और संस्थानों को इस उभरती हुई नई वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाने के लिए अपनी रणनीतियों और व्यावसायिक मॉडल को बदलना होगा। एक मजबूत राजनीतिक नेतृत्व और एक स्थिर आर्थिक दृष्टिकोण के साथ भारत उभरते दशकों में वैश्विक आर्थिक विकास को चलाने के लिए उपयुक्त और तत्पर है। माननीय प्रधानमंत्री के 'लोकल गोज ग्लोबल - मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड' के विज़न के अनुरूप, आइए हम निकट भविष्य में भारत को 1 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के निर्यात तक ले जाने का संकल्प लें और इस आकांक्षा को साकार करने की सामूहिक इच्छा के साथ मिशन मोड पर काम करने के लिए एक साथ आयें।

जय हिन्द!

छोटे उद्यमियों के साथ आगे बढ़ता देश

GOVERNMENT e-MARKETPLACE

"एक ज़माना था जब बड़ी कम्पनियाँ ही सरकार को सामान बेच पाती थीं। लेकिन अब देश बदल रहा है, पुरानी व्यवस्थाएँ भी बदल रहीं हैं। अब छोटे से छोटा दुकानदार भी GeM Portal पर सरकार को अपना सामान बेच सकता है – यही तो नया भारत है। ये न केवल बड़े सपने देखता है, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुँचने का साहस भी दिखाता है, जहाँ पहले कोई नहीं पहुँचा है। इसी साहस के दम पर हम सभी भारतीय मिलकर आत्मनिर्भर भारत का सपना भी जरूर पूरा करेंगे।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल के द्वारा पूरे भारत के विभिन्न विक्रेता आसानी से एक ही प्लेटफॉर्म पर एक क्लिक से अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं। GeM पोर्टल पर पञ्जीकरण से लेकर ऑर्डर प्रोसेसिंग तक कोई शुल्क देय नही है। जब महामारी की मार पड़ी थी तब भी हम पोर्टल के माध्यम से व्यवसाय कर पा रहे थे। GeM टीम की सहायता सेवा भी बहुत तेज़ है।

हंसा कुमार
आयरनमैन सिक्योरिटीज़
प्राइवेट लिमिटेड़, दिल्ली

आज का भारत! आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की राह पर चल पड़ा एक उत्साही राष्ट्र! छोटे-छोटे क़दम उठाकर हम इस उत्साही देश के उत्साही नागरिक, स्वदेशी उत्पादों को जो बढ़ावा दे रहे हैं, वो हमें आत्मनिर्भरता के लक्ष्य की ओर ले जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जो भी भिन्न-भिन्न पहल शुरू की गईं हैं चाहे वो 'वोकल फॉर लोकल' हो, 'मेक इन इंडिया' हो या 'आत्मनिर्भर भारत', सभी का उद्देश्य एक ही है 'एक नए, एक सुदृढ़ भारत का निर्माण'।

जब देश ही नहीं सारा विश्व कोविड-19 महामारी के दौरान संकट से घिरा था, तब प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के आह्वान ने राष्ट्र की क्षमता निर्माण की भावना को एक नई ऊँचाई दी और सशक्त बनने की, अपनी क्षमता में दृढ़ विश्वास रखने की प्रेरणा दी। इस विचार का आधार है हमारे स्वदेशी व्यवसायों की क्षमता को मज़बूत करने की आवश्यकता। प्रधानमंत्री ने बार-बार हमारे देश के किसानों, कारीगरों, बुनकरों, इंजीनियरों, छोटे उद्यमियों और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों में 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' पहल को बढ़ावा देकर गुणवत्तापूर्ण प्रतिस्पर्धी उत्पादन की उनकी क्षमता में अपना विश्वास व्यक्त किया है।

'वोकल फॉर लोकल' होने पर न केवल छोटे उद्यमों को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया जाता है वरन् उत्पादों को वैश्विक और स्थापित ब्रांडों का प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए भी प्रयास होते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कल्पना को साकार करने, देश को आत्मनिर्भर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने, विभिन्न विक्रेता समूहों की पहुँच को बढ़ाने उन्हें डिजिटल इंडिया के डिजिटल यानी ऑनलाइन बाजार में अपना स्थान बनाने के लिये प्रेरित करने और एक सुलभ उपलब्धता प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक खरीद का एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म Government e-Marketplace (GeM) 2016 में शुरू किया गया।

इसी बात को 'मन की बात' के 87वें संस्करण में समझाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि "आज हमारे लघु उद्यमी सरकारी खरीद में Government e-Marketplace यानी GeM के माध्यम से बड़ी भागीदारी निभा रहे हैं।" गतिशील, आत्मनिर्भर और उपयोगकर्ता के अनुकूल, GeM पोर्टल एक गेम-चेंजर रहा है क्योंकि इसने न केवल सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को सरकार से सीधे जोड़ा है बल्कि सरकार को एक ही प्लेटफॉर्म पर उत्पादों और मूल्यों की एक विस्तृत स्पर्धी श्रृंखला प्रदान की है। GeM पर स्वयंसहायता समूहों, महिला स्वयंसहायता समूहों, आदिवासी समुदायों, शिल्पकारों और बुनकरों ने भी अपने उत्पादों को विभिन्न सरकारी मन्त्रालयों, विभागों और संस्थानों को सरलता से बेचा है। यह सीधी पहुँच देश की उद्यम प्रतिभाओं को एक नया आसमान उपलब्ध करा रही है।

2018 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमक्षेत्र के लिए ऐतिहासिक समर्थन और आउटरीच पहल के शुभारम्भ पर अपने भाषण में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, "MSME या छोटे उद्योग हमारे देश में करोड़ों देशवासियों की रोज़ी-रोटी का साधन हैं, ये अर्थव्यवस्था में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये MSME कृषि के बाद रोज़गार देने वाला दूसरा सबसे बड़ा सेक्टर है। खेती अगर भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तो MSME उसके मज़बूत कदम हैं, जो देश की प्रगति को गति देने का काम करते हैं।" वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान सरकार ने GeM पोर्टल के माध्यम से 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की वार्षिक खरीद की है। यह पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 160 % की वृद्धि है, जो प्रदर्शित कर रही है कि व्यक्तिगत से लेकर सार्वजनिक स्तर पर हमारी बढ़ती अर्थव्यवस्था में सारा देश सहभागिता दर्शा रहा है। देश के कोने-कोने से करीब सवा लाख छोटे उद्यमियों, छोटे दुकानदारों ने अपना माल सीधे सरकार को बेचा है। GeM पर कुल कारोबार का 57% MSME इकाइयों के माध्यम से आया है और महिला उद्यमियों का 6% से अधिक का सीधा व्यापार योगदान भी इसमें शामिल है। "Womaniya on GeM" पहल ने महिला उद्यमियों और महिला SHG को GeM पर अपनी वस्तुएँ बेचने में सक्षम बनाया है।

Government e-Market place (GeM) ने महिला उद्यमियों और महिला स्वयंसहायता समूहों को विभिन्न सरकारी मंत्रालयों, विभागों और संस्थानों को सीधे हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा, सहायक सामग्री, जूट उत्पाद, घरों के साज-सजावट के सामान और ऑफिस कार्यालय के सामानों की बिक्री करने में सहायता करने के लिए विशेष पहल की है।

GeM पर किसी भी सार्वजानिक सङ्गठन द्वारा प्रयोग की जा रही 99 प्रतिशत सेवाएँ उपलब्ध हैं और उत्पादों की अधिकाधिक श्रेणियाँ नियमित रूप से जोड़ी जा रही हैं। GeM पोर्टल सरकारी नियमों का पालन करते हुए, महिलाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और निम्न-आय वर्ग के विक्रेताओं के लिए विक्रय तंत्र को प्रभावशाली बनाता है।

कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद से हम अत्यधिक दबाव में थे कि हमें अपना व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है, लेकिन हम GeM पोर्टल के माध्यम से अपने उत्पादों को पूरे भारत में बेचने में सक्षम हुए। GeM में 100% पारदर्शिता है और यह क्षेत्रीय व्यापार और 'मेड इन इंडिया' उत्पादों का समर्थन करता है। मैं भारत सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

राजा मजूमदार
जीसीसी बायोटेक, कोलकाता

मैं पिछले 15 वर्षों से सरकारी विभागों को अपने उत्पाद जैसे स्टेशनरी आइटम बेच रही हूँ, लेकिन GeM के लॉन्च होने के बाद से मेरा टर्नओवर कई गुना बढ़ गया है। मैं इस पहल के लिए प्रधानमंत्री और GeM टीम को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

श्रीमती सुमन मित्तल
स्वामिनी, अतुल सिंडिकेट, उधमपुर

मैं 2016 से अपने उत्पादों को GeM पोर्टल पर बेच रही हूँ। एक महिला उद्यमी होने के नाते मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि GeM ने मुझे और मेरे जैसी कई अन्य महिलाओं को अपने उत्पाद सीधे सरकार को बेचने के लिए एक मञ्च प्रदान किया है। मैं इस पहल के लिए पोर्टल और सरकार को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

मिशु अरोरा
एचएमजी इंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

क्या है GEM PORTAL?

Government e-marketplace यानी कि GeM प्लेटफॉर्म को 9 अगस्त, 2016 को केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों और सम्बद्ध निकायों के लिए सामान्यतः प्रयोग में आने वाली वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए एक ऑनलाइन, एंड-टू-एंड समाधान के रूप में शुरू किया गया था।

डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ते कदमों के तहत एक समावेशी ऑनलाइन ओपन डिजिटल मार्केटप्लेस GeM एक सशक्त उपकरण है, जिसने डिजिटल शक्ति का लाभ उठाकर ई-गवर्नेंस के एक नए युग की शुरुआत की है।

GeM निम्नलिखित लाभ उपलब्ध करवा रहा है :

- तेज, सरल, सहज और किफायती खरीद
- विस्तृत मूल्य विकल्प
- एकाधिक खरीद विकल्प
- सरकार के साथ आसान व्यापार

लंदन में 2021 में आयोजित 'CIPS एक्सीलेंस इन प्रोक्योरमेंट अवार्ड्स' में प्रसिद्ध वैश्विक कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा के बाद "डिजिटल प्रौद्योगिकी का सर्वश्रेष्ठ उपयोग" वर्ग में GeM को विजेता घोषित किया गया। GeM को दो अतिरिक्त वर्गों 'पब्लिक प्रोक्योरमेंट प्रोजेक्ट ऑफ द इयर' तथा 'बेस्ट इनिशिएटिव टू बिल्ड डायवर्स सप्लाई बेस' में भी फाइनलिस्ट के रूप में चुना गया, जहाँ अभिनव पहल करने वाली कुछ प्रख्यात कम्पनियाँ मुकाबले में शामिल थीं।

पञ्चायतों द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर ऑनलाइन क्रय-विक्रय की अनुमति के लिए GeM को पञ्चायती-राज संस्थानों के साथ एकीकृत करने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। 'GeM SAHAY' छोटे विक्रेताओं को GeM पर प्राप्त ऑर्डर के लिए विभिन्न एकीकृत ऋणदाताओं से वित्तपोषण प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध करवाने वाली एक अभिनव पहल है।

यह पोर्टल दिव्यांग उद्यमियों की सार्वजानिक क्रेताओं तक पहुँच भी सुनिश्चित करवाता है, जहाँ वे अपने शानदार उत्पादों का प्रदर्शन कर सकते हैं। जैसे-जैसे GeM सार्वजनिक खरीद के बढ़ते आँकड़ों के साथ बढ़ता जा रहा है, इसकी बढ़ती पारदर्शिता, सुलभता और व्यवसाय में सरलता के कारण इससे जुड़े उद्यमियों की दक्षता में वृद्धि होना तय है। GeM पोर्टल देश का सबसे बड़ा और सर्वसुलभ प्रोक्योरमेंट पोर्टल बनने के लिए तैयार है। और देश के सबसे बड़े e-marketplaces से अधिक स्वदेशी प्रतिस्पर्धी उत्पादों को सरलता से उपलब्ध कराते हुए 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को दृढ़ता प्रदान कर रहा है।

कैसे लिख रहा है GeM भारत में नई कहानियाँ? जानने के लिये QR code scan करें।

अरुलमोझी सरवनन : महिला उद्यमी, प्रधानमंत्री तक प्रयोग करते हैं जिनके उत्पाद

हर सफलता की कहानी एक सपने से शुरू नहीं होती है। कुछ को लिखती हैं परिस्थितियाँ और बेहतर जीवन प्राप्त करने की आवश्यकता। तमिलनाडु के मदुरई की अरुलमोझी सरवनन की ऐसी ही एक कहानी है। 243 रुपये के एक ऑर्डर से ऑनलाइन व्यवसाय शुरू करने वाली अरुलमोझी अब लाखों के ऑर्डर सम्भालती हैं। उनके धैर्य और दृढ़ संकल्प की कहानी इतनी प्रेरक है कि प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात सम्बोधन में उनका उल्लेख किया है।

अरुलमोझी मदुरई ज़िले के उसिलमपट्टी शहर के पास एक छोटे से गाँव में पली-बढ़ी। वह 12वीं कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाईं, क्योंकि उनका परिवार उन्हें कॉलेज भेजने का खर्च नहीं उठा सकता था। 19 साल की आयु में उनका विवाह हो गया था। इसके तुरंत बाद वह एक बेटे की माँ बन गईं और उनका परिवार मदुरई शहर में बस गया। अपनी बेटी के जन्म के दो साल बाद अरुलमोझी ने एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में दाखिला लिया, लेकिन काम की तलाश नहीं की क्योंकि उन्हें लगा कि अगर उन्हें नौकरी मिल गई तो वह अपने बच्चों की देखभाल नहीं कर सकती।

वे काम के लिए घर से दूर उद्यम किए बिना अपनी पारिवारिक खर्च को पूरा करने के अवसरों की तलाश कर रहीं थीं। तभी उन्हें GeM के बारे में पता चला। उन्होंने कार्यालय से सम्बन्धित उत्पादों की आपूर्ति के लिए GeM पर पञ्जीकरण कराया। उन्होंने 40,000 रुपये में अपने गहने तक गिरवी रख दिए और धीरे-धीरे उत्पादों को खरीदना शुरू कर दिया। उन्होंने अपना पहला ऑर्डर प्राप्त करने से पहले दो महीने तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की।

इस दृढ़ संकल्प से उन्होंने केन्द्र सरकार की मुद्रा योजना के तहत 50,000 रुपये के ऋण के लिए एक बैंक से संपर्क किया। फिर उन्होंने थोक बाजारों से उत्पाद खरीदने के लिये नकद धन का इस्तेमाल किया और मुनाफे को वापस उद्योग में लगा दिया।

अरुलमोझी साइट पर उत्पादों का विवरण अपलोड करती हैं, उत्पाद की आपूर्ति करती हैं और उन्होंने मदद के लिए अपने परिवार के पांच सदस्यों की सहायता ली है। वह खरीद और पैकिंग से लेकर डिलीवरी तक की पूरी प्रक्रिया की निगरानी करती हैं और लेह सहित देश के दूर-दराज के इलाकों में ऑर्डर भेज चुकी हैं। कुछ साल पहले उन्हें पीएमओ से 1,600 रुपये के थर्मस फ्लास्क की आवश्यकता प्राप्त हुई। उन्होंने ऑर्डर के साथ प्रधानमंत्री को एक **"धन्यवाद नोट" भेजा, जिसमें उन्होंने बताया कि कैसे GeM और मुद्रा योजना जैसी सरकारी योजनाओं ने उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने और उनकी पारिवारिक आय को बढ़ाने में मदद की थी।**

प्रधानमंत्री ने अक्सर अरुलमोझी को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया है कि अपने दिमाग से एक महिला खुद को कैसे सशक्त बना सकती है।

अरुलमोझी कहती हैं, "जब प्रधानमंत्री मदुरई में एम्स की आधारशिला रखने आए, तो उन्होंने मुझे सीधे फोन किया और मेरी तारीफ की। इसलिए अब मुझमें और अधिक हासिल करने की इच्छा है। मेरा लक्ष्य अपने उत्पादों का निर्माण करना और उन्हें पोर्टल पर बेचना है।"

आयुष स्टार्ट-अप्स
पुरातन ज्ञान से आधुनिकीकरण की गंगा

"आयुष इंडस्ट्री का बाजार भी लगातार बड़ा हो रहा है। 6 साल पहले आयुर्वेद से जुड़ी दवाइयों का बाजार 22 हजार करोड़ रुपये के आसपास का था। आज आयुष मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री, एक लाख चालीस हजार करोड़ रुपये के आसपास पहुँच रही है, यानि इस क्षेत्र में संभावनायें लगातार बढ़ रही हैं। स्टार्ट-अप वर्ल्ड में भी आयुष, आकर्षण का विषय बनता जा रहा है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

प्रधानमंत्री का स्वप्न है दुनिया को स्वस्थ और बेहतर बनाना और यह योग और आयुर्वेद के प्रयोग से ही संभव है। आयुर्वेदिक स्टार्टअप्स को अपनाने और बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री का आह्वान एक महत्वपूर्ण मोड़ पर ले आया है। हमारे प्रयासों से हमें यकीन है कि हम आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर ले जा सकेंगे और देश और दुनिया को स्वस्थ बना सकेंगे।

देवेन्द्र त्रिगुणा
पद्मविभूषण एवं पद्मश्री
राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के वैद्य

'आयुष्मान भवः'! स्वस्थ एवं लंबे जीवन की कामना दर्शाता ये स्नेहासिक्त आशीर्वाद हमारी संस्कृति की पहचान है। हमारी संस्कृति को आदिकाल से आयुर्वेद एवं योग के रूप में प्रकृति से जुड़ाव और स्वास्थ्य रक्षण- संरक्षण का वरदान मिला हुआ है। स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवनशैली – इसकी ओर वर्तमान में जागरूकता बढ़ती जा रही है। 'वर्तमान एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के प्रचलित होने से पहले किसी रोग या समस्या के लिये हम क्या निदान अपनाते थे'? हम अपनाते थे अपनी सैकड़ों-हजारों वर्षों से चली आ रही चिकित्सा पद्धतियाँ। हम अपनाते थे आयुर्वेद, अष्टांग योग, यूनानी, सिद्ध, होमियोपैथी इत्यादि प्रचलित पद्धतियाँ और प्राप्त करते थे अपने रोग का निदान।

सर्वप्रचलित एवं प्रिय आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है जो हजारों वर्षों से भारत में प्रचलित है। आयुर्वेदिक चिकित्सा को कई हजार वर्ष पहले ही वेदों और पुराणों में प्रलेखित किया गया था। आयुर्वेद वर्षों से विकसित होता रहा है और अब योग सहित अन्य पारंपरिक प्रथाओं के साथ एकीकृत है। आयुर्वेद की खोज भारत में ही हुई थी और भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से आयुर्वेद का अभ्यास किया जाता है - 90 प्रतिशत से अधिक भारतीय, आयुर्वेदिक चिकित्सा के किसी न किसी रूप का उपयोग करते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी अपने मन की बात के संबोधन में कहते हैं कि "पूरे विश्व में स्वास्थ्य को लेकर भारतीय चिंतन के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। फिर बात योग की हो, आर्युवेद की हो या पुराने घरेलू नुस्खे की हो भारतीय चिंतन पर दुनिया की नज़र है।

लोगों के स्वास्थ्य और पोषण का बाजार बढ़ता जा रहा है, साथ ही इसमें काफी संभावनाएँ बनती जा रही है। खासकर वोकल फॉर लोकल, यानी अपने यहाँ के तैयार प्रोडक्ट और आयुष के क्षेत्र में अपने यहाँ के स्टार्ट अप आकर्षण का विषय बनते जा रहें हैं। ये भारत के युवा उद्यमियों और भारत में बन रही नई संभावनाओं का प्रतीक है।"

यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा के सेंटर फॉर स्पिरिचुअलिटी एंड हीलिंग के अनुसार इस परंपरा को पश्चिमी दुनिया में पिछले कुछ सालों में बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

आयुर्वेद के जरिए हम अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ा सकते हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता के बढ़ने से न केवल कोरोना वायरस जैसी महामारी के दुष्प्रभाव से खुद को बचाया जा सकता है, बल्कि कई अन्य तरह के घातक वायरस से भी बचाव होता है।

आयुर्वेद देवों से ऋषियों और ऋषियों से वैद्यों तक पहुंचा और जन-जन के स्वास्थ्य लाभ के लिये सुचारू रूप से कार्य करता रहा है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के हमारे सहज सिद्धांतों के साथ हमारे पुरातन ज्ञान का उपयोग करने और मानव जाति को एक स्वस्थ जीवन का लाभ देने के लिए भारत तत्पर है। इसीलिए वर्तमान मोदी सरकार ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देने और उसके प्रचार के लिए कई प्रेरणादायक प्रयास किए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री के प्रयासों और दूरदर्शिता के कारण, हमारी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा दिया गया है और विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया है। प्रधानमंत्री द्वारा आयुर्वेद को दिया गया आवश्यक प्रोत्साहन न केवल देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है, बल्कि सभी के जीवन को स्वस्थ भी बना रहा है।

मनोज नेश्री
सलाहकार, आयुष मंत्रालय

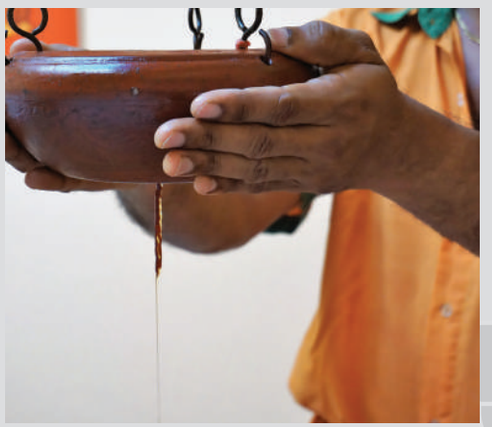

प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के वैद्य पद्मश्री देवेन्द्र त्रिगुणा कहते हैं कि अमेरिका और यूरोप जैसे देशों में चिकित्सा प्रणाली इतनी महंगी है कि वहां के नागरिकों के लिए भी सहज नहीं है। उनकी इच्छा है कि भारत एलोपैथी, आयुर्वेद और योग के गुणों को मिलाकर सभी के लिए एक किफायती चिकित्सा पद्धति तैयार करे।

वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से आयुर्वेद पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के रूप में अपनी वैश्विक प्रसिद्धि को बढ़ा रहा है और 30 से अधिक देशों में पहचान बना चुका है। वैश्विक स्तर पर बढ़ती स्वीकार्यता और औषधियों की मांग के मध्य भारत की बढ़ती उद्यमिता के क्षेत्र में बहुत से नए स्टार्ट-अप्स पनपे हैं क्योंकि कोविड-19 महामारी के दौरान आयुर्वेदिक उत्पादों की वैश्विक मांग में वृद्धि पर प्रकाश डालते हुए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने निजी क्षेत्र और स्टार्ट-अप उद्योग से आयुर्वेद की वैश्विक मांग का अध्ययन करने और 'वोकल फॉर लोकल' बनकर इस क्षेत्र में वैश्विक चैंपियन बनने का आग्रह किया था।

माननीय प्रधानमंत्री के दूरदर्शी दृष्टिकोण और नेतृत्व के साथ भारत सरकार ने देश में आयुष स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। अकादमिक ज्ञान का लाभ उठाकर उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने अपने परिसर में एक इनक्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर की स्थापना की है ताकि नए युग के नए उपक्रमों का समूह तैयार किया जा सके। इसके अलावा स्टार्टअप इंडिया के सहयोग से अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान ने भी फरवरी, 2022 में एक 'आयुष स्टार्ट-अप चैलेंज' शुरू किया है, ताकि प्रारंभिक चरण के स्टार्ट-अप और आयुर्वेद क्षेत्र में इनोवेशन और वैकल्पिक उपचार पर काम करने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया जा सके। 'आयुष स्टार्ट-अप चैलेंज' के विजेताओं को एआईआईए से नकद पुरस्कार और इनक्यूबेशन सपोर्ट दोनों प्राप्त होंगे।

आयुष इंडस्ट्री आज एक लाख चालीस हजार करोड़ रुपये के आसपास पहुँच रही है, मतलब लोग आधुनिक शोध और पारंपरिक ज्ञान के संगम से तैयार जड़ी बूटियों की पद्धति को जीवन का हिस्सा मानने लगे हैं। खासकर ऐसे दौर में जब शहरी संस्कृति में लोगों की दिनचर्या और खानपान बदल गया है।

पुलकित माथुर
विभागाध्यक्ष, पोषण विभाग,
लेडी इरविन कॉलेज

प्रधानमंत्री मोदी अपने मन की बात के संबोधन में कहते हैं भारत सरकार की ऐसी कुशल नीतियों और अथक प्रयासों से आज देश में कई हेल्थकेयर और वेलनेस स्टार्टअप फल-फूल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने 'मन की बात' सम्बोधन में कपिवा, निरोग-स्ट्रीट, आत्रेय इनोवेशन, इक्सोरियल और क्योरवेदा जैसे कुछ ऐसे अनूठे स्टार्टअप्स का उल्लेख किया जो सदियों पुरानी भारतीय विरासत को बढ़ावा देने में योगदान दे रहे हैं, जो अपने और आयुष मंत्रालय के उद्देश्यों को सफल करने की दिशा में एक लंबी दूरी तय कर चुके हैं। ऐसे स्टार्टअप्स की सूची बहुत लंबी हो चुकी है और निरंतर बढ़ती ही जा रही है। यह भारत के युवा उद्यमियों और भारत में बन रही नई संभावनाओं, नई आशाओं का प्रतीक है।

हम सभी को यह भलीभांति ज्ञात है कि स्वस्थ जीवन और अच्छा पोषण आत्म-संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है और सौभाग्य से आयुर्वेद की अपनी विशाल विरासत और ज्ञान के साथ, भारत को कहीं और दृष्टिपात करने की भी आवश्यकता नहीं है। विकास की लहरों पर अठखेलियाँ करते आयुर्वेद आयुष क्षेत्र में स्टार्टअप्स की बढ़ती संख्या के माध्यम से अनूठे तरीकों से हमारे जीवन में फिर से प्रवेश करने के लिए तैयार है। इस प्राचीन ज्ञान ने हमें सिखाया है कि समय के साथ आने वाले परिवर्तनों के साथ हमारी जड़ें और गहरी होती जाती हैं और हम अधिक सशक्त होते जाते हैं।

आयुर्वेद जगत के उभरते सितारे

कपिवा की शुरुआत आयुर्वेद को देश के हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से की गई थी क्योंकि इसमें औषधीय गुणों के अलावा और भी कई गुण हैं। आयुर्वेद का विश्व स्तर पर व्यापक दायरा है। आज की दुनिया में लोग तनाव, प्रदूषण और अन्य कारकों के बावजूद स्वस्थ जीवन चाहते हैं और इससे व्यक्ति के जीवन में आयुर्वेद की भूमिका बढ़ गई है। हम चाहते हैं कि हमारी विरासत भारतीय कंपनियों के माध्यम से दुनिया भर में सभी तक पहुंचे। बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करके देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आयुर्वेद के कई फायदे हैं, उदाहरण के लिए इसका कोई साइड-इफेक्ट नहीं है क्योंकि यह बिल्कुल प्राकृतिक है और रोग-निवारक देखभाल में इसकी उपयोगिता के कारण भी। कपिवा नई पीढ़ी का एक नया नाम है जिसका मूल आयुर्वेद में हैं और इसका उद्देश्य सभी का स्वास्थ्य और कल्याण है।

अमेव शर्मा
संस्थापक एवं प्रमुख कार्यकारी अधिकारी, कपिवा

भारत का विचार सभी का स्वास्थ्य और कल्याण है और इसे लागू करने का सबसे अच्छा तरीका आयुर्वेद है और यही विश्व स्तर पर इसकी बढ़ती स्वीकार्यता का कारण है। लोगों के जीवन में प्रभाव डालने की क्षमता ने निरोग स्ट्रीट का मार्ग प्रशस्त किया। आयुर्वेद को भारत में विकसित किया गया था और दुनिया के लिए बनाया गया था। दुनिया भर में 300 मिलियन संपन्न लोग योग करते हैं, जो आयुर्वेद का परिचय है, इसलिए इसे विभिन्न भाषाओं में विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं में प्रचारित करना महत्वपूर्ण है।

राम कुमार
संस्थापक एवं प्रमुख कार्यकारी अधिकारी, निरोग स्ट्रीट स्टार्टअप

आहार-प्रत्याहार और आयुर्वेद

वर्तमान समय में जब तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण खान-पान और जीवनशैली में भारी बदलाव आ रहा है, आयुर्वेद पर आधारित संतुलित आहार के प्रति जागरूकता और स्वीकार्यता भी बढ़ रही है। लोग अपने दैनिक भोजन और आहार में प्राकृतिक मसालों और अन्य जड़ी-बूटियों को शामिल कर रहे हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के **एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बानी तुमबर अरी** ने उल्लेख किया है कि अपनी मासिक मन की बात कार्यक्रम में, माननीय प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि हमें अपने पारंपरिक आहार पर ध्यान देना चाहिए जो कि सबसे स्वस्थ एवं संतुलित आहार है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हमें अपनी जीवनशैली में स्वस्थ खाने की आदतों को शामिल करना चाहिए।

आयुर्वेद में आहार के महत्व के बारे में बोलते हुए केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु की **प्रमुख डॉ सुलोचना भट्ट** का कहना है कि एक स्वस्थ आहार कैलोरी मूल्य और पोषक तत्वों से अधिक है। आयुर्वेद इस तथ्य पर जोर देता है कि किसी को स्वस्थ भोजन के प्रति जुनूनी नहीं होना चाहिए, बल्कि संयम से खाना चाहिए और जांचना चाहिए कि स्वस्थ जीवन जीने के लिए आपको क्या सूट करता है।

आज पूरा विश्व हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के महत्व को पहचान रहा है। प्रधानमंत्री की कल्पना अब दृष्टिगोचर होने लगी है। भारत सरकार और हमारे युवा उद्यमियों के प्रयासों से आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक प्रणालियां पूरी मानव जाति तक पहुंचेंगी और लाभान्वित होंगी।

आयुष स्टार्टअप्स से प्रधानमंत्री का आह्वान

"आप ऑनलाइन जो भी पोर्टल बनाते हैं, जो भी कंटेंट क्रिएट करते हैं, वो संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं में भी बनाने का प्रयास करें। दुनिया में बहुत सारे ऐसे देश हैं जहाँ अंग्रेजी न इतनी बोली जाती है और न ही इतनी समझी जाती है। ऐसे देशों को भी ध्यान में रखकर अपनी जानकारी का प्रचार-प्रसार करें। मुझे विश्वास है, भारत के आयुष स्टार्ट-अप्स बेहतर क्वालिटी के प्रोडक्ट्स के साथ, जल्द ही, दुनिया भर में छा जायेंगे।"

स्वच्छता मिशन

अपशिष्ट मुक्त राष्ट्र,

उन्नयन के सार्वजनिक प्रयास

“ पुरी के राहुल हों या नासिक के चंद्रकिशोर, ये हम सबको बहुत कुछ सिखाते हैं। नागरिक के तौर पर हम अपने कर्तव्यों को निभाएं, चाहे स्वच्छता हो, पोषण हो, या फिर टीकाकरण, इन सारे प्रयासों से भी स्वस्थ रहने में मदद मिलती है। ”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने मेरे प्रयासों का सम्मान किया। मैं देश के लोगों को बताना चाहता हूं कि आपके प्रयासों की सराहना खुद देश के प्रधानमंत्री भी कर सकते हैं। आपको बस इतना करना है कि सड़कों पर कूड़ा न डालें या नदियों में कूड़ा या प्लास्टिक न फेंके और यदि आप किसी को ऐसा करते देखते हैं, तो आपको उन्हें रोकना चाहिए।

चंद्रकिशोर पाटिल

स्वच्छता का अर्थ है सफाई से रहने की आदत। सफाई से रहने से जहां शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं स्वच्छता तन और मन दोनों की खुशी के लिए आवश्यक है। स्वच्छता, सभी लोगों को अपनी दिनचर्या में अवश्य ही शामिल करना चाहिए।

महात्मा गांधी ने भी कहा था 'स्वच्छता ही सेवा है।' हमारे देश, हमारे जीवन के लिए स्वच्छता अत्यंत आवश्यक है। गंदगी हमारे आसपास के वातावरण और जीवन को प्रभावित करती है। हमें व्यक्तिगत व आसपास भी सफाई अवश्य रखनी चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

स्वच्छता को अपना कर हम बीमारियों को भी खत्म कर सकते हैं। स्वच्छता के इस महत्त्व को गत 2 वर्षों के कोविड महामारी-काल में भलीभांति समझा गया।

इसीलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समेकित स्वच्छता प्रयासों के साथ 2 अक्टूबर 2014 को आरम्भ किया 'स्वच्छ भारत मिशन'। जिसने देश में स्वच्छता की एक क्रांति ला दी। स्वच्छता एवं उसके प्रति निरंतर बढ़ती जागरूकता ने देश को एक ऐसे परिवेश में ढाल दिया जिससे स्वच्छता हमारे नैसर्गिक स्वभाव में अधिक सहयुक्तता के एक जन आंदोलन में बदल गई है।

महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को श्रद्धांजलि के रूप में प्रधानमंत्री ने स्वच्छता के लिए इस राष्ट्रीय आंदोलन का मंत्र दिया 'न गंदगी करेंगे, न करने देंगे'। लेकिन ये स्वप्न अकेले पूरा कर पाना शासन के लिये सम्भव नहीं था इसी लिये जनसहयोग ही था इस अभियान का आधार। जन-जन की चेतना जागी और सामने आये लाखों स्वच्छाग्रही, जिन्होंने गंदगी से पर्यावरण और समाज को बचाने के लिए अनेकों भगीरथ प्रयास किए और इस अभियान को विश्व का सबसे सफल अभियान बना दिया। ऐसे स्वच्छाग्रहियों का जिक्र अक्सर हमारे प्रधानमंत्री अपने संबोधनों में करते रहते हैं, और उनके अनुकरणीय प्रयासों पर प्रकाश डालकर निरंतर उन्हें प्रोत्साहित और जनसामान्य को प्रेरित करते रहते हैं।

चंद्रकिशोर पाटिल: सतत स्वच्छता का सजग नायक

मार्च 2022 के मन की बात संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस स्वच्छाग्रही के प्रयासों की सराहना की है, वे हैं महाराष्ट्र के नासिक जिले के दृढ़ संकल्पित पर्यावरण कार्यकर्ता चंद्रकिशोर पाटिल। चंद्रकिशोर जी सजगता और दृढ़ता के साथ गोदावरी नदी के तट पर खड़े होकर लोगों को नदी में अपशिष्ट न डालने के लिये प्रोत्साहित करते हैं और प्रदूषित करने से रोकते हैं।

उन्होंने पांच वर्ष पहले एक उत्सव के बाद लोगों को जल निकायों में कूड़ा डालते हुए देखा और जल प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों के कारण उनके मन में ये विचार आया और उन्होंने ऐसा करने का फैसला किया। वे इस कार्य में प्रतिदिन बहुत समय देते हैं।

पाटिल जी नदी में कूड़ा डालने से रोकने के साथ-साथ देशी वृक्षों से नदी के किनारों पर हरी-भरी बाड़ लगाने का भी कार्य कर रहे हैं। स्वच्छता के प्रति लोगों के व्यवहार को बदलने के लिये उन्होंने एक अनोखी युक्ति लगाई है। जब वह इस भले काम के लिए लोगों के प्रतिरोध को देखते हैं, तो वह नदी से पानी भरते हैं और लोगों से एक घूंट पानी पीने के लिए कहते हैं। जब लोग मना कर देते हैं, तो वह उन्हें नदी के गंभीर प्रदूषण से अवगत कराते हैं और इसी प्रकार आगे भी जागरूकता फैलाते रहते हैं। स्वच्छ भारत बनाने की दिशा में चंद्रकिशोर जी का अथक प्रयास वास्तव में नागरिकों को स्वच्छ भारत के प्रति जागरूक करने के लिए बहुत ही प्रेरणादायक है।

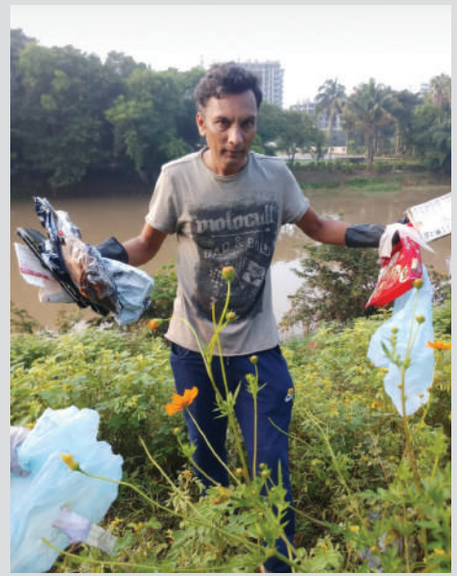

इस विषय में ध्यान खींचते हुए श्री चंद्रकिशोर पाटिल कहते हैं, "आज नदियों का हाल देखा जाए तो हम उसमें हाथ भी नहीं डाल सकते। जबकि जब हम छोटे थे तो इन नदियों का पवित्र जल पीते थे। हमारी पिछली पीढ़ियों ने कभी बोतलबंद पानी भी नहीं पिया, क्योंकि गांवों और उसकी नदियों में जो कुछ भी था स्वच्छ और प्रचुर मात्रा में था। जब से हम शहरों में आए हैं, हमने उन नदियों में प्लास्टिक और कचरे के अलावा कुछ नहीं देखा। इसे हमें रोकने की जरूरत है। क्योंकि अगर हम आज कार्रवाई नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या छोड़ेंगे?"

श्री चंद्रकिशोर पाटिल के अनुसार भारत को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त बनाने की दिशा में हम सबको कुछ कदम उठाने होंगे:

- हर बार घर से निकलते समय कपड़े का थैला साथ रखें।
- जब भी दूध खरीदने जाएं तो कंटेनर साथ रखें।
- अपना कूड़ा केवल कूड़ा ट्रक में ही फेंके न कि नदी के किनारे।
- सड़कों पर कूड़ा न डालें और यदि आप किसी को ऐसा करते देखें तो उन्हें अवश्य रोकें।

अगर हम में से हर एक इस नेक काम के लिए हर दिन आधा घंटा या एक घंटा निकाल दें, तभी हमारा देश कूड़ा मुक्त, प्रदूषण मुक्त और प्लास्टिक मुक्त होगा।

श्री चंद्र किशोर के प्रयासों ने न केवल जागरूकता पैदा की है बल्कि लोगों को देश को स्वच्छ रखते हुए राष्ट्र के विकास में सहायक बनने के लिए प्रेरित किया है।

चंद्रकिशोर पाटिल के प्रयास और जनभागीदारी के लाभ समझें, QR code scan करें।

राहुल महाराणा : प्लास्टिक कचरे से मुक्ति की ओर जुड़ते कदम

उड़ीसा के पुरी में रहने वाले राहुल महाराणा एक और स्वच्छाग्रही हैं, जिनके स्वच्छता हेतु प्रेरक कार्यों के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' सम्बोधन में सराहना की है।

यह सब तब शुरू हुआ जब खुर्दा के एक 22 वर्षीय युवक राहुल महाराणा ने अपने दोस्तों के साथ अष्टारंगा के पास देवी नदमुख (जहाँ नदी और समुद्र का संगम होता है) घूमने जाने का निर्णय किया और वहां जाकर देखा कि वो नदमुख कचरे से अटा पड़ा है। समुद्र तटीय वृक्षसमूह (मैंग्रोव) में थोड़ा आगे उन्होंने मोटी मिट्टी की कई परतों में ढके इस तरह के कचरे को भारी मात्रा में जमा पाया। फिर उन्होंने हर हफ्ते कम से कम एक बार वहां की यात्रा करने और उस जगह को साफ करने का फैसला किया। उस निर्णय के बाद वह अब हर रविवार को अपनी पीठ पर एक बोरी के साथ एकल यात्रा पर निकलते हैं और समुद्र तट और आसपास के मैंग्रोव पर कूड़े या कचरे को इकट्ठा करतें हैं। इस पर्यावरणरक्षक ने प्रदूषण के खतरों और मैंग्रोव की रक्षा के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए गांवों में जागरूकता शिविर शुरू करने की भी योजना बनाई है।

राहुल हर रविवार को सुबह-सुबह पुरी में तीर्थस्थलों और सार्वजनिक स्थलों पर जाते हैं और इन स्थलों से प्लास्टिक अपशिष्ट साफ करते हैं। स्वच्छता के प्रति अपने दृढ़ निश्चय के साथ राहुल ने अब तक सैकड़ों किलो प्लास्टिक अपशिष्ट और गंदगी साफ की है।

इस स्वच्छता अभियान के विषय में नवयुवक राहुल अपनी प्रेरणा के विषय में बताते हैं -

"2018 में मेरे कॉलेज में एक जागरूकता कार्यक्रम में मुझे हमारे ग्रह पर प्लास्टिक प्रदूषण के कुप्रबंधन और उसके विनाशकारी प्रभावों को समझने में मदद मिली। मैं तथ्यों से बहुत आश्चर्यचकित और निराश हो गया था।"

एक सामान्य पृष्ठभूमि से आने वाले राहुल प्लास्टिक कचरे की सफाई का ये भला कार्य स्वतः करते हैं और बिना किसी संगठन या व्यक्ति की सहायता के इस प्रयास में आने वाले सारे खर्च को अपनी जेब से वहन करते हैं। राहुल का स्वच्छता लाने के लिए किए जा रहे प्रयास एवं दृढ़ विश्वास से प्रत्येक भारतीय को स्वच्छता के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलती है।

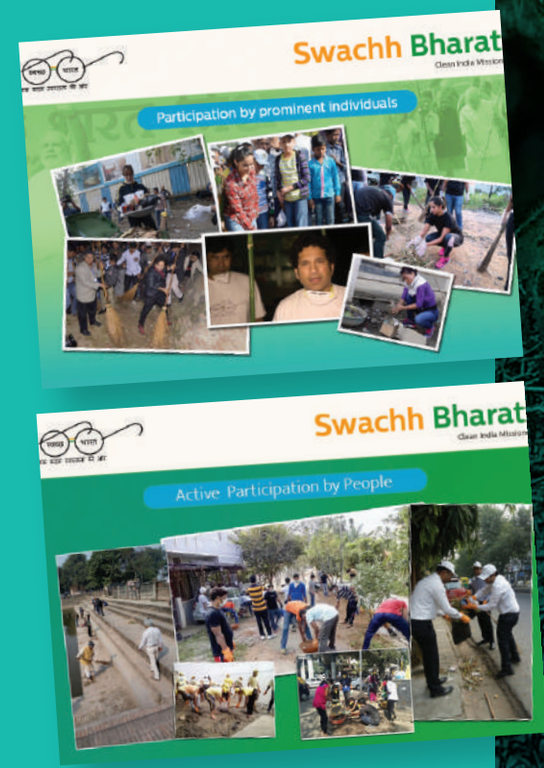

स्वच्छतम शहर : इंदौर क्या दिखता है भविष्य?

ठीक ही कहा गया है, बूंद बूंद से ही घड़ा भरता है, छोटी-छोटी बूँदें ही विशाल सागर का निर्माण करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के प्रयासों से ही एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आता है। इन बातों का एक प्रभावी उदाहरण है **इंदौर**-शहर और उसके लोगों की प्रेरक कहानी। स्वच्छता के मानकों को बनाये रखते हुए इंदौर ने स्वच्छता के मामले में अपनी एक अलग पहचान बनाई है और इंदौर के लोग निस्संदेह बधाई के पात्र हैं।

स्वच्छ सर्वेक्षण के माध्यम से हर वर्ष हो रहे मूल्यांकन **'स्वच्छ भारत रैंकिंग'** में इंदौर कई वर्षों से प्रथम स्थान पर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त इंदौर के लोगों ने इंदौर को 'वाटर प्लस सिटी' में बदलने की यात्रा शुरू की है और इसके लिए अपनी पूरी ताकत से प्रयास कर रहे हैं। इंदौर के नागरिकों ने आगे आकर अपने नालों को सीवर लाइन से जोड़ा है. नतीजतन, सरस्वती और कान्ह नदियों में बहने वाले प्रदूषित पानी में काफी कमी आई है।

इंदौर का उदाहरण इस तथ्य को दर्शाता है कि जनता ही एक प्रगतिशील राष्ट्र का मूल है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 'जनभागीदारी' और 'जनचेतना' ने हर क्षेत्र में भारत की प्रगति को तीव्रता प्रदान की है और भारत की स्थिति वैश्विक मञ्च पर सुदृढ़ की है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान शुरू करना हो, या कोविड-19 महामारी के दौरान सबसे बड़े टीकाकरण अभियान का संचालन करना हो, जन-भागीदारी और जन-आंदोलन के कारण ही भारत ने बड़े लक्ष्यों को प्राप्त किया है और इस दिशा में मील के पत्थर स्थापित किए हैं।

आज जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, हमें स्वच्छ भारत अभियान के संकल्प को कभी कम नहीं होने देना चाहिए और हर गुजरते दिन के साथ स्वच्छता की ओर एक कदम आगे बढ़ते हुए जन-भागीदारी को मजबूत करते हुए देश के जिम्मेदार नागरिक के रूप में सेवा करना जारी रखना चाहिए।

और हमारे लिये हर दिन यही संकल्प होना चाहिये - **एक कदम स्वच्छता की ओर!**

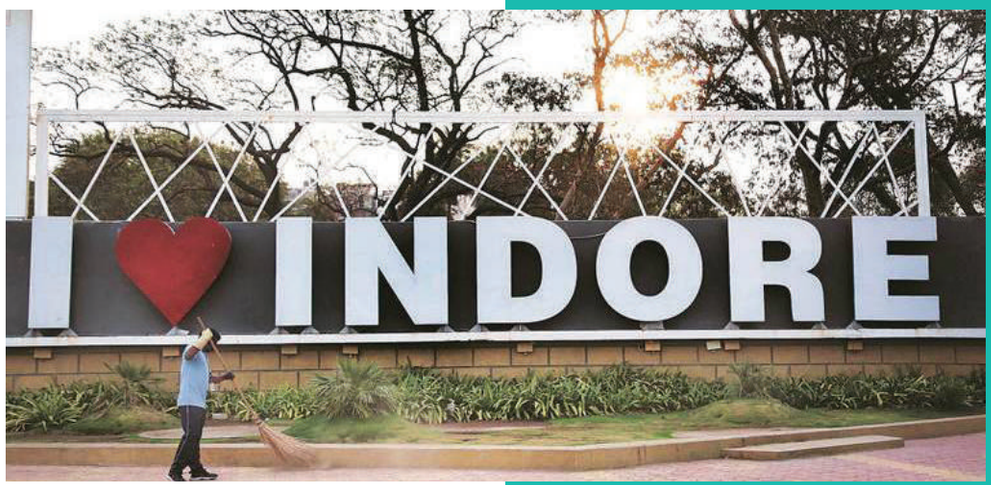

जल संरक्षण

जीवन रक्षण

प्राचीन काल से ही भारत में जल का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह माना जाता है कि इसमें शुद्ध करने और स्वच्छ करने की शक्ति है। भारतीय संस्कृति में प्यासे को पानी उपलब्ध कराना अच्छे कर्म करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक माना जाता है। इसीलिए भारत सरकार जल जीवन मिशन के माध्यम से 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में व्यक्तिगत घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि देश का कोई भी नागरिक पेयजल की उपलब्धि को लेकर चिंताग्रस्त न हो। जल जीवन मिशन ने पहले 3 वर्षों से कम समय में ही 9 करोड़ ग्रामीण घरों में पेयजल उपलब्ध कराने की शानदार ख्याति प्राप्त कर ली है।

"पानी की एक-एक बूंद बचाने के लिए हम जो भी कुछ कर सकते हैं, वो हमें जरूर करना चाहिए। रहीमदास जी सदियों पहले, कुछ मकसद से ही कहकर गए हैं कि 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून'। और पानी बचाने के इस काम में मुझे बच्चों से बहुत उम्मीद है। स्वच्छता को जैसे हमारे बच्चों ने आंदोलन बनाया, वैसे ही वो 'Water Warrior' बनकर, पानी बचाने में मदद कर सकते हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

प्रधानमंत्री द्वारा मेरे प्रयासों का उल्लेख मेरे लिये सौभाग्य की बात है। एक व्यक्तिगत प्रयास से अधिक, पर्यावरण को बचाने के लिए स्वयंसेवकों के, क्षेत्र के प्रयासों के लिए ये मान्यता एक बड़ा प्रोत्साहन है। यह भारत के लोकतंत्र का एक उत्सव है जहां सरकार और नागरिक समाज इस तरह की पहल पर सहयोग करने के लिए एक साथ जुड़े हैं।

अरुण कृष्णमूर्ति
संस्थापक, भारतीय पर्यावरणविद् संस्थान

जल संरक्षण के लिए एक आदर्श - तिरुपुर, तमिलनाडु के रंगाई उद्योग

तिरुपुर, तमिलनाडु के रंगाई उद्योग संघ ने उद्योगों में प्रचलित कुशल जल प्रबंधन प्रथाओं का एक उदाहरण स्थापित किया है। वे शहर के रंगकारों द्वारा खोजी गई जीरो लिक्विड डिस्चार्ज (जेडएलडी) तकनीक का उपयोग करते हैं। वे रंग प्रवाह से बरामद रीसाइकल्ड पानी का उपयोग करके हर दिन 12 करोड़ लीटर तक पानी बचा रहे हैं। 2012 से रंगकारों ने इस तकनीक को शहर के सभी रंगाई उद्योगों में लागू कर दिया है।

पर्यावरण को हानि न पहुँचाने वाली यह प्रथा तब संभव हुई जब 326 रंगाई उद्योग 18 कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (सीईटीपी) और 100 व्यक्तिगत एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (आईईटीपी) बनाने के लिए एक साथ आए। नतीजा यह है कि आज तिरुपुर का रंगाई उद्योग अपने प्रसंस्करण के लिए 90% से 95% रीसाइकल्ड पानी का उपयोग कर रहा है।

इसका प्रभाव इस तथ्य से स्पष्ट समझ आता है कि सन् 2000 से पहले नोय्याल नदी का पानी हाई टोटल डिसॉल्व्ड सॉलिड (टीडीएस) के कारण कृषि प्रयोग के लिए अनुपयुक्त था, लेकिन जीरो लिक्विड डिस्चार्ज सिस्टम के लागू होने के बाद, नदी का पानी फिर से सुरक्षित है। और इस सुरक्षित जल का सिंचाई उद्देश्यों के लिए उपयोग आरम्भ हो चुका है।

भीषण गर्मी हमारे देश में पानी की कमी का एक बड़ा कारण बनती है। सभी के लिए पानी की उपलब्धता बनी रहे इसलिए हमारे जल संसाधनों की रक्षा करना महत्वपूर्ण हो जाता है। सदियों से जल संरक्षण कुओं, तालाबों आदि के रूप में हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है।

जल संरक्षण का प्राचीन ज्ञान हमारे पूर्वजों की दूरदृष्टि को दर्शाता है, जो चाहते थे कि आने वाली पीढ़ियां उनके इस ज्ञान से लाभान्वित हों। वाव, बावड़ी, जोहड़, कुंड, तालाब पारंपरिक तरीकों के कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनके माध्यम से हमारे पूर्वजों ने पानी का संरक्षण किया। लेकिन, समय के साथ हम जल-प्राप्ति के नए तरीकों की ओर बढ़े और उन तरीकों को भूल गए जो हमारी पिछली पीढ़ियों ने हमें उपहार में दिए थे।

ऐसे ही कुछ पुरातन ज्ञान से निर्मित जल-संरक्षण के केन्द्रों का उद्धरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के अपने संबोधन में दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चेन्नई के अरुण कृष्णमूर्ति के प्रयासों पर प्रकाश डाला, जो भारत के तालाबों और झीलों को साफ करने का अभियान चला रहे हैं। वह पहले ही 150 तालाबों और झीलों की सफाई कर चुके हैं। इसी तरह महाराष्ट्र के रोहन काले ने सैकड़ों बावड़ियों को संरक्षित करने के लिए एक अभियान शुरू किया, जिनमें से अधिकांश सदियों पुरानी हैं और हमारी विरासत का हिस्सा हैं।

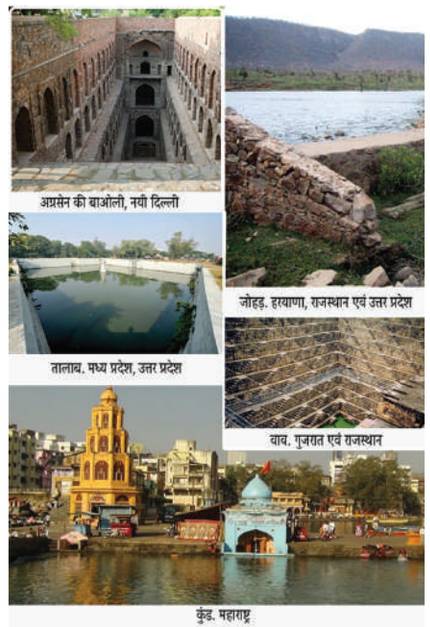

वर्षों की उपेक्षा के कारण कीचड़ और कचरे से भरे सिकंदराबाद के बंसीलाल-पेट कुआं को अब जनभागीदारी द्वारा संरक्षण और स्वच्छता से एक नई छवि प्राप्त हो रही है।

पिछले आठ वर्षों में भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छ भारत और जल संरक्षण की दिशा में केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ समर्पित रूप से काम करना आरम्भ कर दिया है। सरकार ने वर्ष 2019 में जल शक्ति अभियान शुरू किया, जिसका उद्देश्य जल संरक्षण और जल संसाधन प्रबंधन है। जिसकी थीम 'कैच द रेन, व्हेयर इट फॉल्स, व्हेन इट फॉल्स' अर्थात 'वर्षा जल की हर बूंद का संरक्षण' है। यह मिशन देश के सभी जिलों के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिये है। वर्षा जल संचयन, वाटरशेड विकास, वनीकरण के अतिरिक्त यह मिशन पारंपरिक जल निकायों के नवीनीकरण पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

बावड़ियों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली गुजरात की जल मंदिर योजना का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों से स्थानीय स्तर पर इसी तरह के अभियान चलाने का अनुरोध किया है।

एक उष्णकटिबंधीय देश होने के कारण भारत को हर साल कठोर गर्मी का सामना करना पड़ता है। देश में राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, उत्तर-प्रदेश आदि राज्य जहाँ गर्मी के मौसम में तापमान 40 डिग्री से ऊपर पहुंच जाना आम बात है और जहाँ कभी-कभी तो पारा 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। ऐसी भीषण गर्मी की स्थिति न केवल इंसानों को प्रभावित करती है, बल्कि हमारे पशु और पक्षी मित्रों को भी बहुत प्रभावित करती है।

इस महीने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के दौरान हमारे काम का जिक्र किया। जीर्णोद्धार में जुटी टीम इस बात से बेहद खुश है कि इतने ऊंचे स्तर पर हमारे प्रयासों की सराहना हो रही है। महाराष्ट्र के स्थानीय लोग भी प्रसन्न हैं कि देश को महाराष्ट्र की खूबसूरत बावड़ियों के बारे में पता चल रहा है। हम कामना करते हैं कि आने वाले समय में और लोग हमारे अभियान से जुड़ें।

रोहन काले
पर्यावरणविद्, महाराष्ट्र

जब केरल के मुपट्टम श्री नारायणन जी ने ग्रीष्मकाल में जानवरों और पक्षियों की दुर्दशा देखी, तो उन्होंने 'Pots for water of life' नामक एक परियोजना शुरू की। इस अभियान में वह लोगों को मिट्टी के बर्तन बांट रहे हैं ताकि गर्मी के दिनों में पशु-पक्षियों को पानी की समस्या का सामना न करना पड़े यह जानकर आश्चर्य होता है कि मुपट्टम द्वारा दान किए गए मिट्टी के बर्तनों की संख्या 1 लाख को पार करने वाली है।

अरुण कृष्णमूर्ति चला रहे हैं प्रकृति सेवा का अभियान

भारतीय पर्यावरणविद् संस्थान (एनवायरनमेंट फाउंडेशन ऑफ इंडिया) के संस्थापक अरुण कृष्णमूर्ति ने 20 वर्ष की आयु से ही आसपास की झीलों को साफ करने की यात्रा शुरू की थी। उन्होंने Google में अपनी उच्च-वेतन वाली नौकरी छोड़ दी और 2007 में एनवायरनमेंट फाउंडेशन ऑफ इंडिया की स्थापना की, जो एक आंदोलन के रूप में विकसित होता गया। इस संस्थान ने 15 राज्यों में जल निकायों का पुनरुद्धार करने में सहायता की है और अन्य पर्यावरणीय मुद्दों पर भी कार्य किए हैं।

जानें जल संरक्षण के लिये किए गए अरुण कृष्णमूर्ति जी के प्रयास, scan करें QR code

पर्यावरण के लिए अरुण का जुनून बचपन में चेन्नई के मुदिचुर में शुरू हुआ, जो तब जल निकायों से घिरा हुआ था। उनके घर के आसपास के प्राकृतिक वातावरण और इसके धीमे-धीमे क्षरण ने उन्हें जल संरक्षण के लिए स्वयंसेवा करने को प्रेरित किया।

एक छात्र स्वयंसेवक के रूप में बिताए दिनों ने उन्हें सिखाया कि एक एनजीओ कैसे काम करता है, एनवायरनमेंट फाउंडेशन ऑफ इंडिया 2007 से 2011 के मध्य पूर्ण स्वयंसेवी-संचालित आंदोलन था, जिसमें मुख्य रूप से चेन्नई, कोयंबटूर और हैदराबाद में झील की सफाई में अरुण के निजी नेटवर्क के माध्यम से छात्र शामिल हुए थे। कृष्णमूर्ति ऐसे स्वयंसेवी प्रयासों का चेहरा बन गए, जो अब चेन्नई और कई अन्य शहरों में एक लोकप्रिय अवधारणा बन चुके हैं।

2012 में ईएफआई को वन्यजीव संरक्षण और आवास पुनरुद्धार समूह के रूप में पंजीकृत किया गया। उन्हें उसी वर्ष 'रोलेक्स अवार्ड फॉर एंटरप्राइज' के लिए चुना गया था। इनके गैर-लाभकारी ट्रस्ट ने 15 राज्यों में लगभग 141 जल निकायों को बहाल किया है। सरकार द्वारा जल सुरक्षा मिशन के साथ 2014 में एनजीओ की भागीदारी को सुव्यवस्थित करने के बाद बहाली पर ईएफआई के प्रयास दृढ हो गए। सरकार, नागरिक समाज, गैर सरकारी संगठनों और उद्योगों के सहयोग से यह झील संरक्षण के लिए एक सफल मॉडल बन गया।

महाराष्ट्र की बावड़ियों की कायापलट हेतु रोहन काले के प्रयास

"हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए बावड़ी बनाने के लिए कड़ी मेहनत की, ताकि हम पानी का संरक्षण कर सकें। लेकिन आज लोग इन बावड़ियों को डंपिंग ग्राउंड मानते हैं। इसलिए हमने महाराष्ट्र की बावड़ियों के संरक्षण के लिए एक अभियान शुरू किया।

अक्टूबर 2020 से मार्च 2021 तक, मैंने पूरे महाराष्ट्र की यात्रा की और 14000 किलोमीटर की इस यात्रा में 400 बावड़ियों की पहचान की। मैं इस अभियान के विज़न को पुख्ता करने के लिए घुमक्कड़ों, ट्रेकर्स, पुरातन शोधकर्ताओं, पुरातत्वविदों आदि को एक साथ लाया।

अब तक हमने महाराष्ट्र में 1650 बावड़ियों की सफलतापूर्वक मैपिंग की है। हमारा अगला लक्ष्य इन बावड़ियों के लिए आर्किटेक्चर प्रपत्र तैयार करना है जिसमें उनके निर्माण, निर्माता, उद्देश्य आदि के बारे में विवरण शामिल होंगे। इस विस्तृत अध्ययन में हम संरचनाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए बावड़ियों के फोटो और ड्रोन शॉट्स भी एकत्र कर रहे हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य इन खूबसूरत विरासतों को संरक्षित करने और इन्हें लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में बदलने के लिए रणनीतियों की पहचान करना और उन्हें क्रियान्वित करना है।

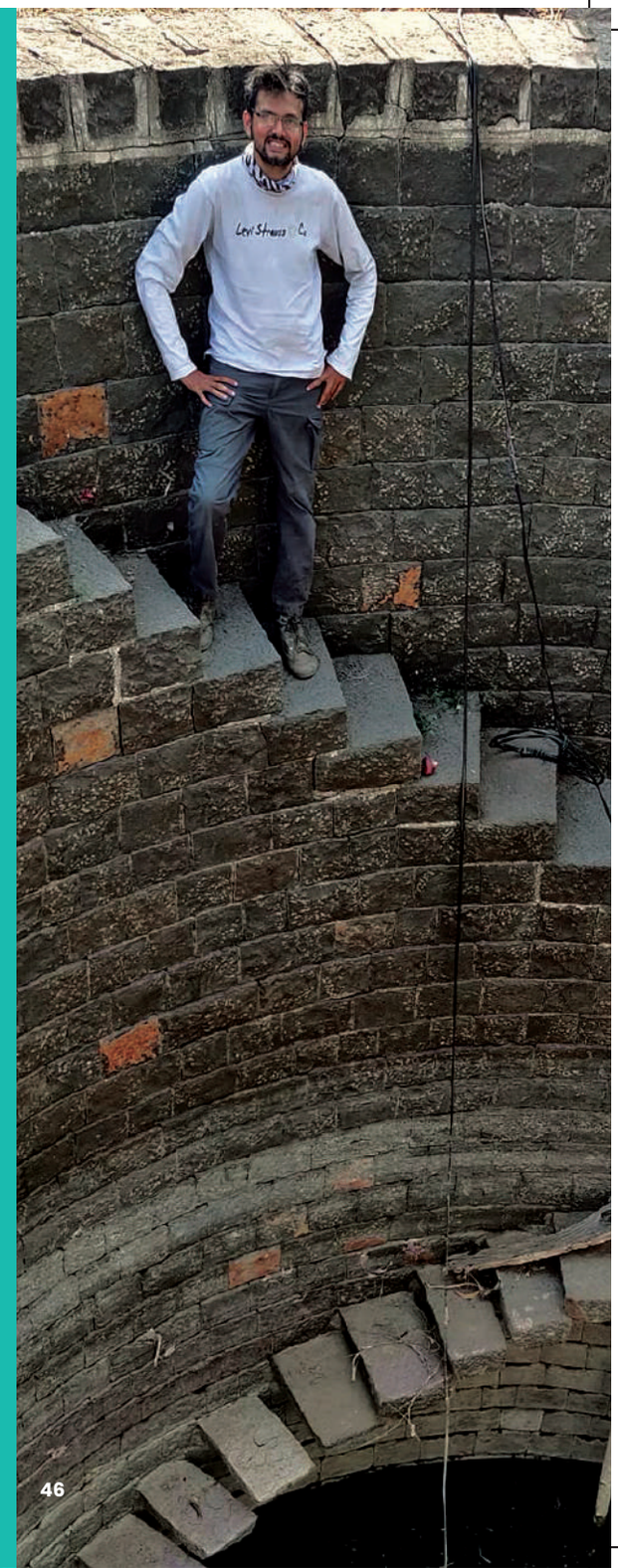

बंसीलाल-पेट कुआं, सिकंदराबाद, तेलंगाना का जीर्णोद्धार : जनभागीदारी से जल संरक्षण

हैदराबाद के सिकंदराबाद इलाके में स्थित खूबसूरत विरासती बावड़ी बंसीलाल-पेट कुआं पिछले 42 साल से कूड़े से पटा पड़ा था। नगर प्रशासन ने लोगों की सहायता और समर्थन के साथ बावड़ी का जीर्णोद्धार करने का कार्यभार संभाला। इस जनभागीदारी के अभियान में विभिन्न गैर सरकारी संगठन, सफाई कर्मचारी और स्थानीय लोग शामिल थे और इस 53 फीट गहरी अद्भुत बावड़ी से लगभग 2000 टन कचरा हटाया गया।

"वर्षा जल परियोजना" की संस्थापक और इस आंदोलन में सक्रिय योगदानकर्ता **कल्पना रमेश** कहती हैं कि **बंसीलाल-पेट** जैसी बावड़ी शहरी बाढ़, भूजल प्रदूषण की बड़ी समस्याओं को कम कर सकती हैं और वर्षा जल संचयन का स्रोत बन सकती है।

जीर्णोद्धार गतिविधियों से जुड़े पर्यावरणविद् **एमवी रामचंद्रुडु** का मानना है कि बंसीलाल-पेट बावड़ी संरक्षण की एक मजबूत परंपरा का प्रतीक है जहां लोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए पानी का संचय करने में सक्षम थे।

ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम के **जोनल कमिश्नर श्रीनिवास रेड्डी** ने जोर देकर कहा कि बंसीलाल-पेट जैसी बावड़ियों की बहाली आने वाली पीढ़ियों को बताएगी कि 100-150 साल पहले इस तरह की खूबसूरत संरचनाओं का निर्माण कैसे किया गया था और यह स्थानीय लोगों की पानी से संबंधित जरूरतों को कैसे पूरा करते थे।

मुपट्टमश्री नारायण : एक चैतन्य प्रकृतिसेवी की प्रेरणादायक कहानी

9 साल पहले मैंने पक्षियों, गिलहरियों और अन्य जानवरों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के बारे में सोचा था। यह विचार मेरे मन में तब आया जब मैंने देखा कि एक पक्षी पीने के पानी की कमी के कारण मर रहा है। इस घटना ने मेरे मन में घर कर लिया और मैं इस समस्या का समाधान खोजने के लिए दृढ़ संकल्पित हो गया। उसी दिन मैंने पक्षियों के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराने का प्रयास शुरू किया। मैंने 'Pots for water of life' नामक एक प्रयास की योजना बनाई।

परियोजना के तहत मैंने अपने साथियों तक, पक्षियों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए मिट्टी के बर्तनों की आपूर्ति की। मैं उन्हें पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए इनमें पानी रखने के लिए कहता हूं। समय के साथ बर्तनों की संख्या बढ़ती रहती है। मैंने हर साल देश के अलग-अलग हिस्सों में हजारों बर्तन बांटना शुरू किया। इससे लाखों पक्षियों, गिलहरियों आदि को पीने का पानी मिलता था।

तीन साल पहले मैंने स्काउट और गाइड छात्रों की भागीदारी के विषय में सोचा और इस तरह मैं कासरगोड से कन्याकुमारी तक परियोजना का विस्तार कर सका। पिछले साल मैंने महाराष्ट्र के वर्धा में सेवाग्राम आश्रम में बर्तन वितरित किए। इस आश्रम में दुनिया भर के कई राष्ट्राध्यक्षों, राजनेताओं, साहित्यकारों और ऐसे प्रभावशाली लोगों का आवागमन होता है। जब वे आश्रम पहुँचते हैं तो उन्हें मेरा एक घड़ा दिया जाता है। जब वे बर्तन को अपने देश ले जाते हैं तो यह उनके अपने देश में दान कार्य करने के लिए प्रेरणा बन जाता है और इस प्रकार यह परियोजना पूरी दुनिया में फैली हुई है।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि इस साल यह संख्या एक लाख बर्तनों के आसपास चल रही है। अब मैं अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने की दिशा में अत्यंत संतुष्ट हूं।

श्री नारायण मुपट्टम के अभियान को बेहतर समझने के लिये QR code scan करें।

पश्चिमी तट पर चमकता पूर्वोत्तर का सूर्य

माधवपुर का मेला

कला, संस्कृति और विविधता में एकता की अद्भुत झलक

"भारत की संस्कृति, हमारी भाषाएं, हमारी बोलियाँ, हमारे रहन-सहन, खान-पान का विस्तार, ये सारी विविधताएँ हमारी बहुत बड़ी ताकत है। पूरब से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक भारत को यही विविधताएं, एक करके रखती हैं, एक भारत-श्रेष्ठ भारत बनाती हैं । इसमें भी हमारे ऐतिहासिक स्थलों और पौराणिक कथाओं, दोनों का बहुत योगदान होता है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने सम्बोधन में)

भारत भूमि सदा से अपनी विविधताओं की वजह से प्रसिद्ध रही है। वह भाषा की विविधता हो या भूगोल की, खान-पान की विविधता हो या वेशभूषा की, कला की विविधता हो या संस्कृति की, विविधता सदा भारत में उपस्थित रही है।

इतने वैभिन्य के बाद में ये विविधता सदा भारत की श्रेष्ठता, इसकी महत्ता और इसकी अक्षुणता को पोषित करती रही है। इतनी विविधता, अनेकता के बाद भी भारत जैसी एकता सम्पूर्ण विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलती।

जैसे रंगों के अनूठे मेल से इंद्रधनुष की सुंदरता अलग ही परिलक्षित होती है, ठीक उसी तरह भारत की इंद्रधनुषी संस्कृति और परम्पराएं उसे सम्पूर्ण विश्व में सब से अनूठा, अद्वितीय बनाती हैं। हमारे देश का विवरण करते समय सबसे प्रचलित टिप्पणी आती है 'विविधता में एकता'। लगभग 33 लाख-वर्ग-किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैले हमारे देश में अनेक भाषाएं, मान्यताएं और परम्पराएं हैं। इतनी विविधता के बावजूद हम सभी देशवासियों को जोड़ती कुछ कड़ियाँ हैं—एक साझा इतिहास, हमारे संस्कार, हमारे मूल्य और हमारी पौराणिक कथाएं। शायद यही बनाता है हमें **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'।** और इसी भाव को जन-मन में फलने-फूलने के लिए सरकार और संस्कृति मंत्रालय ने भी आहूत किया एक प्रयास और इस विविधता के अंश को जन-जन तक पहुँचाने के लिये शुरू हुआ 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम।

इसका उद्देश्य है देश के विभिन्न प्रदेशों के लोगों के बीच पारस्परिक समझ को बढ़ावा देना। यह कार्यक्रम हमें विविध भाषाई, सांस्कृतिक और पंथ-संप्रदायों के धागों में बुने देश के नागरिक होने की ज़िम्मेदारी से अवगत करता है। ज़िम्मेदारी न केवल अन्य प्रांतों की विशेषताओं के बारे में जानने की, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच अंतर्निहित जुड़ाव को महसूस करने की, समझने की। जैसा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि सरदार पटेल ने हमें 'एक भारत' दिया था और अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इसे 'श्रेष्ठ भारत' बनाएं।

और श्रेष्ठता के पथ पर बढ़ने के लिए और हमारे पारस्परिक वैषम्य के मध्य छिपे हुए साम्य को उद्धृत करने हेतु हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों तक पुनः वापस जाना होगा ताकि हम अनेकता में एकता की इस भावना को समझ सकें। पौराणिक प्रतीकों के वर्तमान उपबंधों और प्राचीनकालीन व्यवस्था की ऐसी ही साम्य से जुड़ी निशानी है 'माधवपुर का मेला'।

मार्च-2022 के अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बताया, "माधवपुर मेला" गुजरात के पोरबंदर में समुद्र के पास माधवपुर गाँव में लगता है। लेकिन इसका हिन्दुस्तान के पूर्वी छोर से भी नाता जुड़ता है। आप सोच रहे होंगें कि ऐसा कैसे संभव है? तो इसका भी उत्तर एक पौराणिक कथा से ही मिलता है। कहा जाता है कि हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण का विवाह, नॉर्थ-ईस्ट की राजकुमारी रुक्मिणी से हुआ था। ये विवाह पोरबंदर के माधवपुर में संपन्न हुआ था और उसी विवाह के प्रतीक के रूप में आज भी वहां माधवपुर मेला लगता है। ईस्ट और वेस्ट का ये गहरा नाता, हमारी धरोहर है।"

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की जिस अद्भुत और सुन्दर मिसाल का ज़िक्र प्रधानमंत्री ने किया, उसका नाम है माधवपुर मेला। गुजरात का यह प्रसिद्ध मेला अरुणाचल प्रदेश की इदु मिश्मी जनजाति से जुड़ा है। आश्चर्य होता है कि देश के पूर्वी और पश्चिमी छोर पर बसे इन दो राज्यों का आखिर एक मेले से क्या सम्बन्ध है?

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी इदु-मिश्मी जनजाति के राजा भीष्मक की पुत्री थीं। कालिका पुराण में उल्लिखित भीष्मकनगर दिबांग घाटी जिले में रोइंग के पास स्थित माना जाता है। लोकमान्यताओं के अनुसार रुक्मिणी बहुत पहले ही श्रीकृष्ण को अपना पति मान चुकी थीं। परन्तु रुक्मिणी के भाई रुक्मी ने इसका विरोध किया और प्रस्तावित किया कि राजकुमारी की शादी शिशुपाल से की जाए। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी के अनुरोध पर उनके अवांछित विवाह को रोकने के लिए उनका हरण कर लिया और उन्हें अपने साथ अपने नगर (वर्तमान गुजरात) ले आए। माना जाता है कि माधवपुर में ही श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का विवाह संपन्न हुआ और उसी के प्रतीक के रूप में यहाँ उत्सव मनाया जाता है और विशाल मेला लगता है।

यहाँ पर स्थित 15वीं शताब्दी का माधवराई मंदिर इस स्थान की प्रमाणिकता को प्रदर्शित करता है। लगभग एक सप्ताह चलने वाले इस आयोजन के दौरान भगवान श्रीकृष्ण का विग्रह एक सुरुच और सुसज्जित रथ में गांव की परिक्रमा करता है। यह त्योहार-रूपी मेला उस अमर यात्रा का जश्न भी मनाता है जो रुक्मिणी ने भगवान श्रीकृष्ण के साथ अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक की थी। वास्तव में, माधवपुर मेला प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प का जीता-जागता उदाहरण है।

प्रधानमंत्री के 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान से प्रेरित हो कर 2018 में इस मेले में पूर्वोत्तर भारत के 8 राज्यों ने सांस्कृतिक आयोजनों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। जैसा कि प्रधानमंत्री जी ने कार्यक्रम में बताया, इस मेले में अब पूर्वोत्तर भारत से बहुत से घराती (कन्या पक्ष के लोग) भी आने लगे हैं। रुक्मिणी के परिवार के प्रतिनिधि के रूप में माधवपुर मेले में उत्तर-पूर्व के लोगों के जत्थे का पारंपरिक स्वागत किया जाता है। अब हर वर्ष इस आयोजन में पूर्वोत्तर और गुजरात की कला, संगीत, कविता और लोकनृत्यों की अनुपम छटा देखने को मिलती है, जो देश के सांस्कृतिक समायोजन का, वैशिष्ट्य का एक अद्वितीय उदाहरण है।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत को साकार करता **माधवपुर मेला।**

- गुजरात में आयोजित यह मेला देश के पश्चिमी और पूर्वी छोर को जोड़ता है।
- माधवपुर में ही श्रीकृष्ण और अरुणाचल प्रदेश के इदु मिश्मी जनजाति की राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह संपन्न हुआ था।
- भीष्मकनगर, अरुणाचल प्रदेश का उल्लेख महाभारत और कालिका पुराण में पाया जाता है।
- इस मेले में गुजरात और पूर्वोत्तर भारत के राज्यों का सांस्कृतिक एकाकीकरण देखने को मिलता है।

राष्ट्र की एकता को संजोते हुए, कला एवं सांस्कृतिक वैविध्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिये प्राचीन माधवपुर के मेले जैसे विभिन्न कार्यक्रमों की आस्था और महत्ता को समझ कर न सिर्फ उन्हें संरक्षित किया जा रहा है बल्कि उनके माध्यम से देश को प्रेरणा और विश्वास की एक अनुपम सीख प्रेषित की जा रही है। ये भारत की आधारभूत संरचना से जुड़ा विषय न सिर्फ हमें हमारी विविधताओं से भरी जीवनशैलियों को एक साथ ला रहा है वरन ये भी सिद्ध कर रहा है कि प्राचीन काल से अब तक इतनी विविधताओं के बीच भी रहा है "एक भारत"। साथ ही हम सब को एक एहसास दिला रहा है कि कैसे रहा है यह 'श्रेष्ठ भारत'।

इसी उद्देश्य से शुरू हुए प्रधानमंत्री द्वारा प्रेरित 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम का लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच एक सतत और संरचित सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देना है। प्रधानमंत्री का यह मानना है कि जब हम भारत की विविधता को पहचान पाएंगे, तब ही भारत की शक्ति को पहचान पाएंगे। इस आदान-प्रदान के माध्यम से आज विभिन्न राज्यों के लोग परस्पर एक-दूसरे की भाषा, संस्कृति, परंपराओं और प्रथाओं को समझ रहे हैं, जो भारत की एकता और अखंडता को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

साथ ही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' आत्मनिर्भर उद्यमिता और देश के सामाजिक व आर्थिक विकास को बढ़ावा भी दे रहा है। जिससे एक साथ मिलकर उठे हाथ एक सूत्र में बंधे हाथ, देश को आर्थिक मोर्चे पर आत्मनिर्भर बनायें और एक परिवार की भांति मिलजुल कर हम अपने देश को सबल, सक्षम और समृद्ध बनायें।

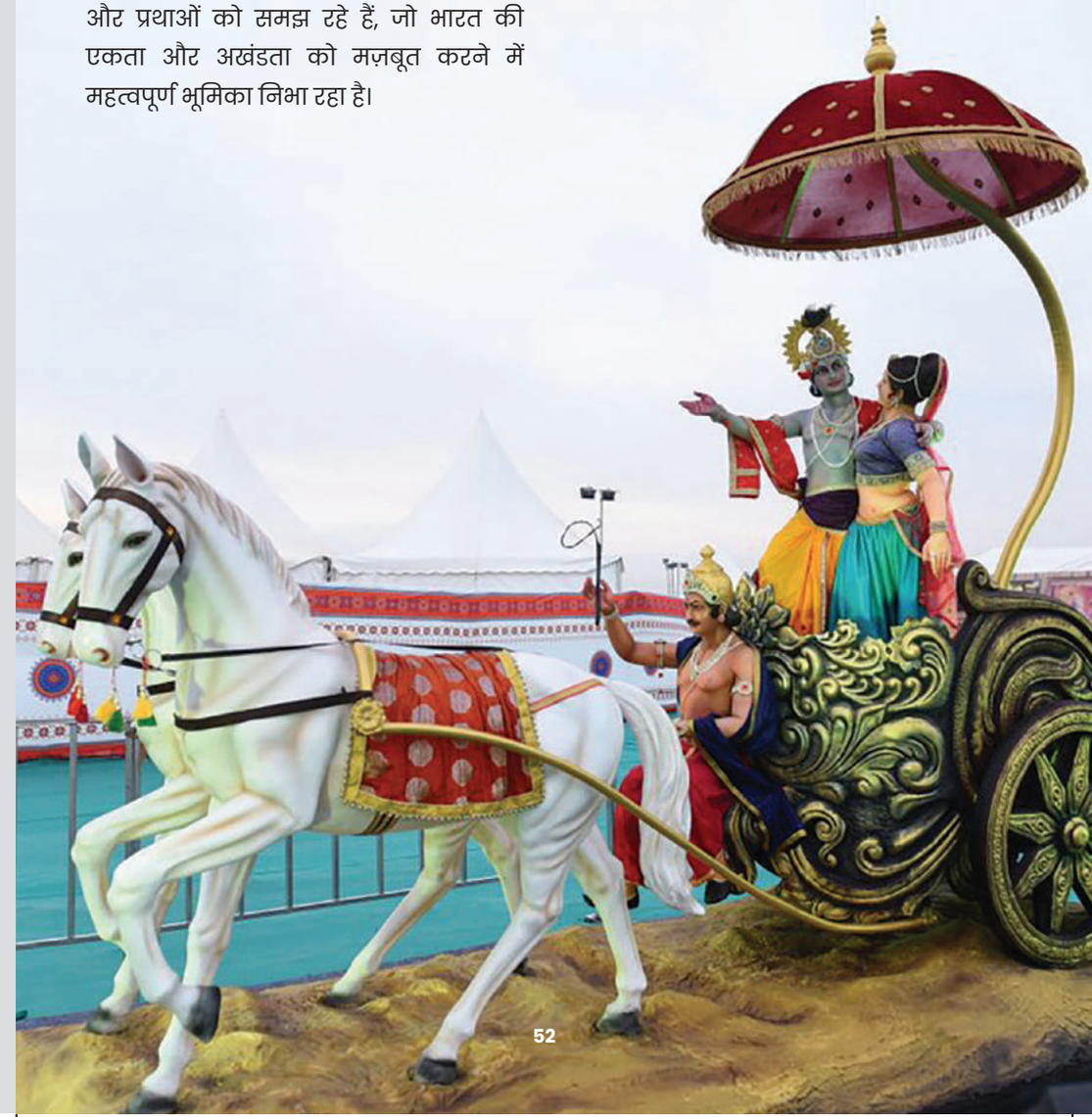

माधवपुर मेले का इतिहास: श्री कृष्ण-रुक्मिणी विवाह की कथा

एक प्रसिद्ध इतिहासकार और पौराणिक कथाओं के विद्वान श्री नरोत्तम पालन ने भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह के उत्सव पर आधारित माधवपुर मेले के बारे में अपने विचार साझा किए। उनका कहना है कि कृष्ण को राजकुमारी रुक्मिणी का एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने उनसे शिशुपाल के साथ अवांछित विवाह से बचाने का अनुरोध किया था क्योंकि वह कृष्ण से शादी करना चाहती थीं। कृष्ण कुंडिलपुर (वर्तमान भीष्मकनगर, अरुणाचल प्रदेश) में पहुंचे और रुक्मिणी को अपने साथ ले आये। राजकुमारी के भाई रुक्मि और उनके मित्र शिशुपाल कृष्ण और रुक्मिणी का कुछ दूरी तक पीछा करने लगे, उन्हें कृष्ण के भाई बलराम जी ने रास्ते में रोक लिया, जो कृष्ण जी की सहायता के लिए आये थे।

श्री नरोत्तम पालन आगे बताते हैं कि 'रुक्मिणी हरण' की इस घटना को श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध में तीन अध्यायों में विस्तार से वर्णित किया गया है। वहीं विवाह स्थल पर प्राकृतिक वनस्पति का वर्णन गुजरात के माधवपुर घेड में विवाह होने की प्रामाणिकता की पुष्टि करता है। माधवपुर मेले की ऐतिहासिकता के बारे में बताते हुए श्री पालन कहते हैं कि मेला कम से कम 500 साल पुराना है क्योंकि इसका उल्लेख 15वीं शताब्दी के अंत में श्रीमद्भागवत पर आधारित कविताओं में मिलता है। इतिहासकार इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं कि ये मेला आज तक सामाजिक एकीकरण के एक अद्वितीय उदाहरण के रूप में चलता जा रहा है।

महाभारत : भारत की एकता और श्रेष्ठता का महाग्रंथ

प्राचीन वैश्विक परंपरा संस्कृति और विरासत अनुसंधान संस्थान के निदेशक श्री विजय स्वामी के अनुसार भीष्मकनगर, निचली दिबांग घाटी, अरुणाचल प्रदेश सिद्ध करता है कि कैसे महाकाव्य महाभारत एक भारत श्रेष्ठ भारत का प्रतीक है।

महाकाव्य महाभारत को इतिहास के साथ-साथ धर्म का आधारभूत ग्रन्थ माना जाता है। अर्जुन, भीष्म, कुंती और द्रौपदी जैसे कई पात्रों से भरा महाकाव्य हमें भारतीय संस्कृति के विभिन्न मूल्यों की शिक्षा देता है। इस महाकाव्य के केंद्र में भगवान श्री कृष्ण हैं, युद्ध के मैदान में उनकी अर्जुन को दी गई शिक्षा ने भगवत गीता का रूप लिया। महाभारत में भगवान कृष्ण की कई कहानियां हैं जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप की संस्कृति को बहुत प्रभावित किया है। उनके जीवन की किंवदंतियां आज भी देश के सुदूर कोनों में सुनी जाती हैं।

भारत का पूर्वोत्तर हिस्सा इसका अपवाद नहीं है। यहां के लोगों ने भगवान श्री कृष्ण के जीवन की कहानियों को नृत्य और संगीत में रूपांतरित किया है। अरुणाचल प्रदेश में निचली दिबांग घाटी जिले में रोइंग के पास स्थित भीष्मकनगर एक ऐसा स्थान है जहां कोई भी प्रदर्शन कला रूपों में ऐसी कहानियों के प्रभाव का अनुभव कर सकता है। महाभारत में (राजा भीष्मक का) कुंडिल राज्य (वर्तमान में भीष्मकनगर) का संदर्भ इस तथ्य को दोहराता है कि महाकाव्य ने युगों से, भारत के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने वाली एक अंतर्निहित कड़ी के रूप में कार्य किया है।

माधवपुर का मेला कैसे सिद्ध कर रहा है "एक भारत श्रेष्ठ भारत" का आचरण? जानने के लिये QR code scan करें।

बिप्लबी भारत
स्वतंत्रता के नायकों को नमन

"देश ने अपनी आज़ादी के नायक-नायिकाओं को श्रद्धा पूर्वक याद किया। इसी दिन मुझे कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में बिप्लबी भारत गैलरी के लोकार्पण का भी अवसर मिला। भारत के वीर क्रांतिकारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए यह अपने आप में बहुत ही अनूठी गैलरी है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

नरेंद्र मोदी सरकार की यह पहल देश के युवाओं को शिक्षित करने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 23 मार्च, 2022 को उद्घाटित बिप्लबी भारत गैलरी उन बलिदानों की गाथा है जो क्रांतिकारियों ने भारत को औपनिवेशिक साम्राज्य के चंगुल से मुक्त करने के लिए दिए थे।

चंद्र कुमार बोस
पौत्र, नेताजी सुभाषचंद्र बोस

आज हम आजादी का अमृत वर्ष मना रहे हैं। इस पुण्य अमृत महोत्सव को देखने के लिये हमारे अगणित क्रांतिकारी यहाँ नहीं हैं, वे क्रांतिकारी जिन्होंने अपने रक्त से इस स्वतंत्रता के वृक्ष को अंकुरित किया, जिन्होंने अपने परिवार, अपने मित्र, अपने प्रिय जनों की, अपनी सुख सुविधा को तिलांजलि दे दी ताकि ये देश स्वतंत्र हो सके। देश के ऐसे ही अनन्त नायकों के योगदानों को जन-जन तक पहुंचाना हमारा दायित्व है।

इसी धारणा को मन में रखकर इस शहीद दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 23 मार्च 2022 को कोलकाता के शानदार विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में बिप्लबी भारत गैलरी का उद्घाटन किया। भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों की वीरता और प्रतिबद्धता के सम्मान में उनकी स्मृति का विशेष दिन 'शहीद दिवस', के रूप में मनाया जाता है क्योंकि 1931 में इसी दिन ब्रिटिशराज ने हमारे क्रांतिकारियों भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को फांसी पर लटका दिया था।

क्रांतिकारी ही थे जिन्होंने पूरे देश में फैले राष्ट्रवाद की अग्नि को प्रज्वलित किया। अपने साहस और अटूट भावना के साथ उन्होंने अंग्रेजों से विद्रोह की एक लहर पैदा की - वह लहर जिसे आज भी बिप्लबी भारत गैलरी में देखी जा सकती है। वो लहर जो उस राजनीतिक और बौद्धिक पृष्ठभूमि को दर्शाती है जिसने भारत की स्वतंत्रता के क्रांतिकारी आंदोलन को गति दी। 'बिप्लबी' एक बंगाली शब्द है जिसका अर्थ होता है क्रांतिकारी। यह गैलरी स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों के योगदान और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए उनके सशस्त्र प्रतिरोध को प्रदर्शित करती है।

कोलकाता में हमारी वैभवशाली विरासत के चार पुनरुद्धारित भवनों को राष्ट्र को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान एवं उनकी प्रेरणा को प्रदर्शित करने के लिए यह स्थान समर्पित किया। भारत की स्वतंत्रता के इतिहास पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती यह गैलरी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले क्रांतिकारियों के योगदान पर भी प्रकाश डालती है। स्वतंत्रता आंदोलन के इस सर्वप्रमुख पहलू को बिप्लबी भारत गैलरी इस आंदोलन की महत्ता को उचित स्थान देने का प्रयास है।

गैलरी स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से चलने वाली एकता के धागे को रेखांकित करती है जहां विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, संसाधनों को देश की सेवा करने के लिए देशभक्ति के साथ एकजुट किया गया था। बिप्लबी भारत गैलरी कोलकाता की समृद्ध परंपरा में एक नया मोती है और पश्चिम बंगाल की विरासत को संरक्षित करने और बढ़ाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

स्वतंत्रता संग्राम के महान नेताओं द्वारा छोड़ी गई विरासत को संरक्षित करना राष्ट्र निर्माण का प्रमुख तत्व है। इस विजन की दिशा में काम करते हुए 'विरासत पर्यटन' को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान चल रहा है। दांडी में नमक सत्याग्रह की स्मृति में स्मारक हो या जलियांवाला बाग स्मारक का पुनर्निर्माण, केवड़िया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी या रांची में भगवान बिरसा मुंडा मेमोरियल पार्क और संग्रहालय, यह अतीत की विरासत है जो वर्तमान का मार्गदर्शन करती है और हमें प्रेरित करती है एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए। देश अपने इतिहास को ऊर्जा के जीवंत स्रोत के रूप में देखता है। क्रांति, सत्याग्रह और जन जागरूकता के संयुक्त प्रयासों से भारत को सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति मिली। इन गुमनाम नायकों की ऐसी कहानियां हम सभी को देश की प्रगति के लिए अथक प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं। मन की बात के अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को बिप्लबी भारत गैलरी और क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में बताते हुए कहा की **"भारत के वीर क्रांतिकारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए यह अपने आप में बहुत ही अनूठी गैलरी (gallery) है। यदि अवसर मिले, तो आप इसे देखने ज़रूर जाइयेगा।"**

आज जब भारत अपनी आजादी के 75वें वर्ष में है और अपने गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन कर रही है।

भारत सरकार "जनभागीदारी" की समग्र भावना के साथ अमृत महोत्सव आयोजन के लिए कई अभिनव कार्यक्रमों की श्रृंखला चला रही है जो स्वतंत्रता के 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा में बलिदान और देशभक्ति की समय यात्रा करते हुए भारत के नागरिकों के बीच व्यापक भागीदारी और जागरूकता बढ़ाने का काम कर रही है। देश भर में शहीद दिवस, संविधान दिवस और महापरिनिर्वाण दिवस जैसे अनेक प्रतिष्ठित और प्रभावशाली कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

इन आयोजनों का उद्देश्य प्रतिभागियों को एक नए भारत के निर्माण की यात्रा से जोड़ना है। स्थानीय सरकार की भागीदारी के साथ-साथ भारतीय नागरिकों की उत्साहजनक भागीदारी रही है। आज़ादी का अमृत महोत्सव एक भव्य उत्सव है जो एक युवा, नए और प्रतिष्ठित भारत की आकांक्षाओं और सपनों के साथ अतीत के स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों और गौरव के अभिसरण को प्रदर्शित करता है।

बिप्लबी भारत का विस्तार : जनता के विचार

बिप्लबी भारत गैलरी में आने वाले विभिन्न दर्शकों के विचार हमने संग्रहित किए हैं जो गैलरी की महत्ता और इसके उद्देश्य को प्रभावशाली सिद्ध कर रहे हैं। गैलरी में आने वाले दर्शकों में से कुछ भिन्न आयुवर्ग के दर्शकों के विचार यहाँ प्रदर्शित हैं :

“गैलरी में मौजूद वस्तुएँ जैसे बंदूकें, पत्र और ऐतिहासिक महत्व के लेख स्वतंत्रता-आंदोलन के समय की थीं। संग्रहालय में मौजूद बंदूकें वही थीं जो ब्रिटिश राज के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रयोग की गई थीं। प्रोजेक्टर की मदद से संग्रहालय के अंदर स्वतंत्रता सेनानियों से जुड़ी कई कहानियां दर्शाई जा रही हैं। क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों जैसे सुभाष चंद्र बोस, खुदीराम बोस आदि द्वारा उपयोग की जाने वाली बहुत सी चीजें भी संग्रहालय में प्रदर्शित की गई हैं।”

"मुझे उन महिला क्रांतिकारियों के बारे में पता चला जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया है।"

"गैलरी में लेखों को बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है। मैंने तोपों और दस्तावेजों पर लेख भी देखे जो 1857 के हैं। इंटरनेट पर बहुत सी ऐसी चीजें थीं जिन्हें लोग पढ़ते थे। लेकिन यहाँ आप वास्तव में उन चीज़ों को देख सकते हैं।”

"मेरे लिये यह एक अत्यंत ज्ञानवर्धक अनुभव था और मुझे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के बारे में बहुत सी नई चीजें सीखने का अवसर मिला। भारत की आजादी में योगदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में अधिक जानने के लिए हम में से प्रत्येक को कम से कम एक बार इस स्थान का दौरा करना चाहिए।”

"एक भारतीय होने के नाते, यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने देश के इतिहास को जानें। यह संग्रहालय क्रांतिकारियों के जीवन को बहुत ही सरल रूप में प्रदर्शित करता है। संग्रहालय के लेखों को भी डिजिटाइज़ किया गया है ताकि हम पुराने दस्तावेजों को टच पैड पर आसानी से पढ़ सकें। यह मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था।”

“हमें गैलरी में जाकर ही बहुत कुछ सीखने को मिलता है। संग्रहालय हमें सिखाता है कि आज हम जिस भारत में रहते हैं उसे औपनिवेशिक शासन के चंगुल से कैसे मुक्ति मिली।”

"भूतकाल से जुड़ना बहुत अच्छा अनुभव था। संग्रहालय का दौरा करने के बाद, मुझे एक भारतीय होने पर गर्व महसूस हो रहा है।"

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Keshav Prasad Maurya
@kpmaurya1

जीवेम शरदः शतम्।

हमारी संस्कृति में सबको सौ वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दी जाती हैं।

हम सात अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएंगे। आज पूरे विश्व में हेल्थ को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है।

- मा. पीएम जी

#MannKiBaat
Translate Tweet

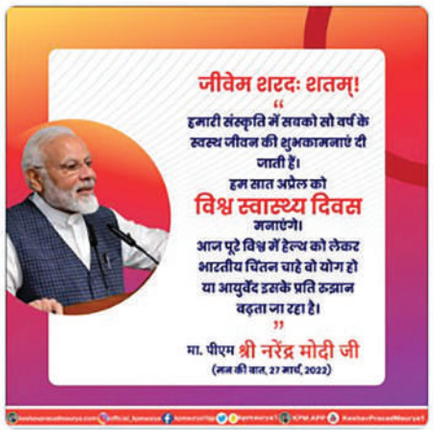

5:46 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for Android

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

'मन की बात' के आज के 87वें संस्करण में प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने विभिन्न विषयों पर बात की और कई प्रेरक विचार साझा किए। काशी निवासी पद्मश्री बाबा शिवानंद जी का उल्लेख उन्होंने किया। #MannKiBaat
Translate Tweet

1:49 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Jagat Prakash Nadda
@JPNadda

ये हमारा सौभाग्य है कि, एक ऐसी शख्सियत हमारे प्रधानमंत्री @narendramodi जी के रूप में मौजूद है जो हमसे सीधा संवाद करने में यकीन रखते हैं। ऐसे में उस संवाद को जन-जन तक पहुँचाना न सिर्फ हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में हमारा योगदान भी है।

#MannKiBaat
Translate Tweet

5:20 PM · Mar 27, 2022 · Twitter Web App

K.Annamalai
@annamala_k

#MannKiBaat with Hon PM

Earlier it was believed only big people could sell products to the Govt but the GeM Portal has changed this

(GeM) initiative launched in Aug 2016 to bring transparency in public procurement has achieved an order value of Rs 1 lakh crore in a single year!

12:25 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Dr. Shalabh Mani Tripathi
@shalabhmani

देश, विराट कदम तब उठाता है जब सपनों से बड़े संकल्प होते हैं।
- प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी।
#MannKiBaat
Translate Tweet

1:47 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for Android

Devendra Fadnavis
@Dev_Fadnavis

नाशिकचे चंद्रकिशोर पाटील गोदावरी स्वच्छ ठेवण्यासाठी करीत असलेल्या प्रयत्नांची आज मा. पंतप्रधान नरेंद्र मोदीजी यांनी 'मन की बात'मध्ये प्रशंसा केली.
हा उपक्रम सर्वांसाठीच प्रेरणादायी आहे!
youtu.be/M_S8iVNJhys
#MannKiBaat @mannkibaat
Translate Tweet

4:51 PM · Mar 27, 2022 · Twitter Media Studio

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

आज #MannKiBaat कार्यक्रम में प्रधानमंत्री @narendramodi जी से भारत की सांस्कृतिक विविधता, योग-आयुर्वेद जैसी हमारी पारंपरिक सम्पदा के विस्तार, $400 बिलियन एक्सपोर्ट, GeM की सफलता और 21वीं सदी के मजबूत, नए भारत के निर्माण में "सबके प्रयासों" की कई अनूठी कहानियां सुनने को मिली।
Translate Tweet

1:54 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Smriti Z Irani
@smritiirani

#MannKiBaat में PM @narendramodi जी ने गुजरात में पानी की समस्या को दूर करने के लिए 'जल मंदिर योजना' की सफलता के ऊपर चर्चा की।

अपने क्षेत्र में जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने में अपना योगदान देकर हम भी जल संरक्षण और संवर्धन जैसे नेक कार्य में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।
Translate Tweet

1:36 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Yogi Adityanath
@myogiadityanath

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा @mannkibaat कार्यक्रम में आज काशी निवासी 'पद्मश्री' बाबा शिवानंद जी का उल्लेख किया गया है।

126 वर्ष की आयु में बाबा शिवानंद जी की स्फूर्ति एवं स्वास्थ्य योग की महत्ता को दर्शाते हैं।

ईश्वर उन्हें दीर्घायु प्रदान करें!
Translate Tweet

12:14 PM · Mar 27, 2022 · Twitter Web App

C R Paatil
@CRPaatil

स्वास्थ्य का सीधा संबंध स्वच्छता से भी जुड़ा है।

महाराष्ट्र के नासिक में रहने वाले स्वच्छाग्रही चंद्रकिशोर पाटिल जी.. @narendramodi सर #MannKiBaat
Translate Tweet

12:08 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

One of the encouraging trends in the recent years is the rise and success of several start-ups and enterprises in the AYUSH sector - PM Sri @narendramodi

#MannKiBaat

11:54 AM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

जीवेम शरदः शतम्!

हमारी संस्कृति में सबको सौ वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दी जाती हैं।

हम सात अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएंगे।आज पूरे विश्व में हेल्थ को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद, इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है: PM @NarendraModi जी #MannKiBaat

Translate Tweet

3:46 PM · Mar 27, 2022 · Twitter Media Studio

Parvesh Sahib Singh
@p_sahibsingh

पिछले एक साल में GeM portal के जरिए, सरकार ने एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की चीजें खरीदी हैं।

देश के कोने-कोने से करीब-करीब सवा-लाख लघु उद्यमियों, छोटे दुकानदारों ने अपना सामान सरकार को सीधे बेचा है। #MannKiBaat

Translate Tweet

11:24 AM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

97 Retweets 473 Likes

G Kishan Reddy
@kishanreddybjp

"The week long utsav, Madhavpur Mela, is a confluence of the cultures of East and West of India showcasing the true spirit of #EkBharatShresthaBharat."

In today's #MannKiBaat, PM Sh @narendramodi called on citizens to know more about the Mela.

#NorthEast #DekhoApnaDesh

3:27 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

जीवेम शरदः शतम्।

हमारी संस्कृति में सबको सौ वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दी जाती हैं।

हम सात अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएंगे। आज पूरे विश्व में हेल्थ को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है: PM @NarendraModi जी #MannKiBaat

Translate Tweet

11:52 AM · Mar 27, 2022 · Twitter Web App

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

मा.प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat में जल संरक्षण के लिए 75 अमृत सरोवर बनाने की बात कही।

प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम प्रदेश में जलाभिषेक अभियान प्रारंभ कर रहे हैं। इसमें हम जनसहयोग से नवीन जल संरचनाएं निर्मित और भूजल स्तर को बढ़ाने के प्रयास करेंगे।

Translate Tweet

1:02 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for Android

Dr K Laxman
@drlaxmanbjp

देश के कोने-कोने से नए-नए product जब विदेश जा रहे हैं। असम के हैलाकांडी के लेदर प्रोडक्ट हों या उस्मानाबाद के handloom product, बीजापुर की फल-सब्जियां हों या चंदौली का black rice, सबका export बढ़ रहा है। #MannKiBaat

Translate Tweet

11:33 AM · Mar 27, 2022 · Twitter for Android

Dilip Saikia
@DilipSaikia4Bjp

जीवेम शरदः शतम्।

हमारी संस्कृति में सबको सौ वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दी जाती हैं।

हम सात अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएंगे। आज पूरे विश्व में हेल्थ को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। #MannKiBaat

Translate Tweet

11:29 AM · Mar 27, 2022 · Twitter for iPhone

290 Retweets 318 Likes

Yaser Jilani
@yaserjilani

I feel honoured to have gone to the Panch Teerth associated with Dr. Ambedkar. I would also urge you all to visit these inspiring places- @narendramodi #MannKiBaat

ये हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि हमें बाबासाहेब से जुड़े पंच तीर्थ के लिए कार्य करने का भी अवसर मिला है। उनका जन्म-स्थान महू हो, मुंबई में चैत्यभूमि हो, लंदन का उनका घर हो, नागपुर की दीक्षा भूमि हो, या दिल्ली में बाबासाहेब का महा-परिनिर्वाण स्थल, मुझे सभी जगहों पर, सभी तीर्थों पर जाने का सौभाग्य मिला है। मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से आग्रह करूँगा कि वे महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले और बाबासाहेब अम्बेडकर से जुड़ी जगहों के दर्शन करने जरूर जाएँ। आपको वहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

11:36 AM · Mar 27, 2022 from New Delhi, India · Twitter for Android

308 Retweets 329 Likes

Vinod Tawde
@TawdeVinod

महिला सशक्तिकरण के भाव से परिपूर्ण @narendramodi जी का बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के संदेश पर संकल्पित हो हमें समाज के आधार को प्रशस्त करना है।

#MannKiBaat

Translate Tweet

Mann Ki Baat Updates मन की बात अपडेट्स and BJP

12:10 PM · Mar 27, 2022 · Twitter for Android

PM: Desi items a rage abroad

Buoyed by India achieving the export target of $400 billion, PM Modi in the latest episode of Mann Ki Baat made a push for "Atma Nirbhar Bharat" saying, "Let's make the local 'global' ... Even new products from all corners of the country are reaching foreign shores." **P9**

'मन की बात' कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री

स्थानीय को वैश्विक बनाएं, भारतीय उत्पादों की प्रतिष्ठा बढ़ाएं

निर्यातीत ऐतिहासिक वाढ : मोदी

MANN KI BAAT

PM: Demand for made in India goods growing globally

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, MARCH 27

PM Narendra Modi. *PTI*

IN HIS 87th episode of Mann Ki Baat, Prime Minister Narendra Modi today pointed towards India achieving its export target of $400 billion, and said this was only possible due to the hard work of farmers, artisans, weavers, engineers, small entrepreneurs and the MSME sector.

"India has achieved the export target of $400 billion, that is Rs 30 lakh crore... At one time, the figure of exports from India used to be $100 billion, at times $150 billion, sometimes even $200 billion... today, India has reached $400 billion. In a way, this means the demand for items made in India is increasing all over the world. Another meaning is that the supply chain of India is getting stronger by the day," the PM said.

Leather products from Hailakandi in Assam, handloom products from Osmanabad, fruits and vegetables from Bijapur, black rice from Chandauli — the export of all of these is increasing, he said, adding that an array of new products were being sent to new countries.

"The first consignment of millets grown in Himachal and Uttarakhand was exported to Denmark. Bainganapalli and Subarnarekha mangoes from Krishna and Chittoor districts of Andhra Pradesh were exported to South Korea. Fresh jackfruits from Tripura were exported to London by air and for the first time King Chilli from Nagaland was dispatched to London. Similarly, the first consignment of Bhalia wheat was exported from Gujarat to Kenya and Sri Lanka," said Modi.

Referring to the government e-market (GeM portal), Modi said even small entrepreneurs were playing a major partnership role in procurement through the portal. He said during the past year, the government had purchased items worth more than Rs 1 lakh crore through the portal.

"Around 1.25 lakh small entrepreneurs and small shopkeepers from every corner of the country have sold their goods directly to the government. There was a time when only big companies could sell goods to the government... Now even the smallest of shopkeepers can sell one's goods to the government on the GeM portal," he said.

With World Health Day on April 7, Modi said he was astonished to see the agility of 126-year-old Padma awardee Baba Sivanand, a monk from Varanasi.

Modi said lifestyles that included yoga and Ayurveda were picking up globally and that the market of the Ayush industry had grown from Rs 22,000 crore six years ago to Rs 1,40,000 crore today. The PM also acknowledged the work of swachhagrahis (cleanliness warriors) — Chandrakishore Patil from Nashik, who cleans trash from the banks of Godavari, and Rahul Maharana of Puri, who collects plastic waste from pilgrimage sites in in the city. Mupattam Sri Narayanan of Kerala, who started a project, "Pots for water of life", distributing earthen pots so that animals and birds do not face water problems during summer, also found mention in Mann ki Baat today.

He emphasised the need for water conservation and recycling, adding that children could be drivers of this movement by becoming "water warriors".

'મન કી બાત'માં ગુજરાતના માધાપુર મેળાની ચર્ચા કરતા વડાપ્રધાન

ભારતે કરી ૩૦ લાખ કરોડની ઐતિહાસિક નિકાસ

नए भारत के सपने बड़े, लोकल को अब ग्लोबल बनाएं: पीएम

'मन की बात' में कहा- 30 लाख करोड़ का निर्यात हुआ

Modi: Adopt steps to conserve water

As the country braces for the summers, Prime Minister Narendra Modi's Mann Ki Baat on Sunday touched upon the critical issue of water conservation. Sharing his own experience from Gujarat, he cited the important role stepwells have played in dealing with water scarcity.

Emphasising on the importance of individual and collective efforts, the PM suggested that at least 75 "Amrit Sarovars" can be made in every district of the country as part of "Azadi ka Amrit Mahotsav." TNN

CHAMPIONING NATURE

Stepwell restoration finds place in Mann ki Baat

EXPRESS NEWS SERVICE

बड़े सपनों को साकार करेंगे : मोदी

नया भारत न केवल बड़े सपने देखता है बल्कि लक्ष्य तक पहुंचने का साहस दिखाता है

सपनों से बड़े संकल्प को सिद्ध कर रहा भारत : मोदी

ਸੁਪਨਿਆਂ ਨਾਲ ਵੱਡੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰ ਰਿਹੈ ਭਾਰਤ : ਮੋਦੀ

लोकल को ग्लोबल बनाना है : मोदी

मन की बात

- पीएम बोले, देश का निर्यात 400 अरब डालर के पार जाने पर गर्व है
- ये अर्थव्यवस्था से ज्यादा भारत के सामर्थ्य से जुड़ी बात है

नई दिल्ली (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोविड महामारी के बीच देश का निर्यात 400 अरब डॉलर के पार जाने में देश के कृषि, हस्तशिल्प एवं हथकरघा उद्योगों की भूमिका को रेखांकित करते हुए रविवार को कहा कि यदि प्रत्येक देशवासी स्थानीय वस्तुओं का आग्रही हो जाएगा तो भारत की स्थानीय वस्तुओं को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय होने में देर नहीं लगेगी।

मोदी ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात के 87वें अंक में कहा कि यदि हर देशवासी 'लोकल के लिए वोकल' हो जाएगा तो 'लोकल को ग्लोबल' होते देर नहीं लगेगी। उन्होंने कहा कि बीते सप्ताह हमने एक ऐसी उपलब्धि हासिल की, जिसने हम सबको गर्व से भर दिया। आपने सुना होगा कि भारत ने पिछले सप्ताह 400 अरब डॉलर, यानी 30 लाख करोड़ रुपए के निर्यात का लक्ष्य हासिल किया है। उन्होंने कहा कि पहली बार सुनने में लगता है कि ये अर्थव्यवस्था से जुड़ी बात है लेकिन ये अर्थव्यवस्था से भी ज्यादा भारत के सामर्थ्य एवं क्षमता से जुड़ी बात है। एक समय में भारत से निर्यात का आंकड़ा कभी 100 अरब, डेढ़ सौ अरब और कभी दो सौ अरब डॉलर तक हुआ करता था। अब आज भारत 400 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इसका एक मतलब ये है कि दुनिया भर में भारत में बनी चीजों की मांग बढ़ रही है, दूसरा मतलब यह है कि भारत की आपूर्ति श्रृंखला दिनोंदिन और मजबूत हो रही है। मोदी ने कहा कि देश के कोने-कोने से नए-नए उत्पाद अब विदेश जा रहे हैं। असम के हैलाकांडी के चर्म उत्पाद हों या उस्मानाबाद के हथकरघा उत्पाद, बीजापुर की फल-सब्जियां हों या चंदौली का काला चावल, सबका निर्यात बढ़ रहा है। अब, आपको लद्दाख की विश्व प्रसिद्ध खुबानी दुबई में भी मिलेगी और सऊदी अरब में तमिलनाडु से भेजे गए केले मिलेंगे। अब सबसे बड़ी बात ये है कि नए-नए उत्पाद नए-नए देशों को भेजे जा रहे हैं।

'మన్ కీ బాత్'లో మన బన్సీలాల్‌పేట్ మెట్లబావి

नए भारत में बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने का साहस: मोदी

मन की बात

400 अरब डॉलर निर्यात दुनिया में हमारे उत्पादों की मांग का प्रतीक

- प्रधानमंत्री ने भारतीय उत्पादों की प्रतिष्ठा और बढ़ाने का आह्वान किया

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि आज का नया भारत न केवल बड़े सपने देखता है, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुंचने का साहस भी दिखाता है। उन्होंने कहा कि आज देश के कोने-कोने से नए-नए उत्पाद विदेश जा रहे हैं।

आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात की 87वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत द्वारा इस वित्त वर्ष में 400 अरब डॉलर के निर्यात का लक्ष्य हासिल करना दर्शाता है कि दुनिया में हमारे उत्पादों की मांग बढ़ रही है। जब हर भारतीय 'लोकल के लिए वोकल' होता है, तब स्थानीय उत्पादों को वैश्विक होते देर नहीं लगती है। आइए, स्थानीय को 'वैश्विक' बनाएं व अपने उत्पादों की प्रतिष्ठा और बढ़ाएं।

लंबी सूची: प्रधानमंत्री ने कहा, सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे उत्पाद नए-नए देशों को भेजे जा रहे हैं। अब आप दूसरे देशों में जाएंगे, तो मेड इन इंडिया उत्पाद पहले की तुलना में कहीं ज्यादा दिखेंगे। विदेशों में निर्यात किए जा रहे उत्पादों की सूची बहुत लंबी है। जितनी लंबी यह सूची है, उतनी ही बड़ी मेक इन इंडिया की ताकत है।

जीईएम पोर्टल से मदद: उन्होंने कहा कि सरकार ने पिछले एक वर्ष में सरकारी ई-मार्केट (जीईएम) पोर्टल के जरिए एक लाख करोड़ से ज्यादा की चीजें खरीदी हैं और देश के कोने-कोने से करीब-करीब सवा-लाख लघु उद्यमियों और छोटे दुकानदारों ने अपना सामान सरकार को सीधे बेचा है। उन्होंने भरोसा जताया कि जल्द ही भारत के आयुष स्टार्टअप का दुनिया में दबदबा होगा।

Export target met as our goods are in demand: PM

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

[NARENDRA MODI] PRIME MINISTER

> When each and every Indian is vocal for local, it does not take long for the local to become global

NEW DELHI: Hailing the country for achieving the significant export target of $400 billion, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday that demand for Indian products was increasing globally.

In the 87th edition of his monthly radio broadcast, Mann Ki Baat, the Prime Minister urged people to remain "vocal for local" so that Indian products could gain prestige across the world.

Farmers, artisans, weavers, engineers, small entrepreneurs, medium, small and micro enterprises (MSMEs) and people from different professions are the basis and "true strength" of the country, Modi said.

"It is only due to their hard work that the goal of exporting to the tune of $400 billion has been achieved, and I am happy that this power of the people of India is now reaching new markets in every nook and corner of the world," he said.

"When each and every Indian is vocal for local, it does not take long for the local to become global. Let's make the local

continued on →16

MANN KI BAAT

'$400-b in exports signifies India's potential'

OUR BUREAU
New Delhi, March 27

Prime Minister Narendra Modi on Sunday applauded India's growth potential as the country achieved its export target of $400-billion in this financial year. The Prime Minister noted that India's strength is its MSME sector, farmers, engineers, weavers, among others.

Prime Minister Narendra Modi

Speaking at the 87th edition of the monthly radio broadcast, *Mann ki Baat*, Modi noted that 'vocal for local' has helped India popularise its products on the global arena.

"It is only due to their hard work that the goal of exporting to the tune of $400 billion has been achieved and I am happy that this power of the people of India is now reaching new markets in every nook and corner of the world," the Prime Minister said. He further said, "When each and every Indian is vocal for local, it does not take long for the local to become global. Let's make the local 'global' and augment the prestige of our products further."

'Thinking big'

India is blessed with many cultures, languages and foods. Diversity is something that unites us, Modi said, adding that the country is taking massive steps towards economic progress. India is now thinking big and working to realise that vision. 'Made in India' products are now more visible abroad, Modi said, adding, "I applaud our farmers, youngsters, MSMEs. Earlier, it was believed only big people could sell products to the government, but the GeM Portal has changed this, illustrating the spirit of a New India."

Applauding the efforts of the entrepreneurs who are taking new products from all corners of the country to foreign shores, the PM cited leather products from Hailakandi, handloom products from Osmanabad, fruits and vegetables from Bijapur and black rice from Chandauli. "Now, you will also find the world famous apricot of Ladakh in Dubai, too, and in Saudi Arabia, you will find bananas shipped from Tamil Nadu. Most importantly, an array of new products are being sent to newer countries," he added.

മിണ്ടാപ്രാണികൾക്കായി ഒരു ലക്ഷം മൺപാത്രങ്ങളിൽ ജീവജലം: നാരായണന് മോദിയുടെ പ്രശംസ

मन की बात

देश ने 30 लाख करोड़ का ऐतिहासिक लक्ष्य हासिल किया

पीएम मोदी बोले, बड़े होने चाहिए संकल्प, निर्यात में बना रिकॉर्ड

ये है मेक इन इंडिया की ताकत

अब छोटे से छोटे दुकानदार भी सामान बेच सकेंगे

देश के कोने-कोने से नए-नए प्रोडक्ट अब विदेश जा रहे

ரூ.30 லட்சம் கோடி ஏற்றுமதி இலக்கை அடைந்து இந்தியா சாதனை

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி பெருமிதம்

Supply chain strengthening: PM

Staff Writer
feedback@livemint.com
NEW DELHI

India's supply chain management is strengthening and goods produced in the country are garnering robust global demand, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday.

The Prime Minister said exports of $400-billion in FY22 hints at growing global demand for Indian goods.

Addressing the nation on his weekly *Mann Ki Baat* radio programme, Modi said exports of $400-billion in FY22, hints at growing global demand for Indian goods and its strengthening supply chain network.

Merchandise exports grew 42.7% to $400.9 billion till 21 March, from $280.9 billion in the year-ago period.

The previous record of $330 billion was witnessed in 2018-19.

"At one time, the figure of exports from India used to be $100 billion, at times $150 billion, and sometimes $200 billion...today, India has reached $400 billion. In a way, it means global demand for products made in India is increasing; the other meaning is that the supply chain is getting stronger by the day," he added.

Modi expressed satisfaction with the exports and said that the power of the Indian people is now reaching new markets in "every nook and corner of the world".

"When each and every Indian is vocal for local, it does not take long for the local to become global. Let's make the local global and increase the prestige of our products further."

Modi said the milestone was achieved due to the efforts of farmers, artisans, engineers, weavers, small entrepreneurs and the micro, small and medium enterprises.

The PM also highlighted the success of Government e-Marketplace, saying that the government bought items worth more than ₹1 trillion in 2021, through the public procurement platform. Nearly 125,000 small entrepreneurs, shopkeepers have sold their products directly to the government, he added. "There was a time when only big companies could sell goods to the government. But, India is changing; and so are the old systems. Now even the smallest shopkeepers can sell their goods to the government via Government e-Marketplace. This is the New India."

ଓଡ଼ିଆ ଯୁବକ ରାହୁଲଙ୍କୁ ମୋଦୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

ਨਵਾਂ ਭਾਰਤ ਵੱਡੇ ਸੁਪਨੇ ਵੇਖਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਵੀ ਦਿੰਦਾ ਹੈ-ਮੋਦੀ

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਦਿੱਤਾ ਆਰਥਿਕ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ

ਨਵਾਂ ਭਾਰਤ ਵੱਡੇ ਸੁਪਨੇ ਵੇਖਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ...

(ਸਫ਼ਾ 1 ਦੀ ਬਾਕੀ)

ਪਾਣੀ ਬਚਾਉਣ ਦੀ ਲੋੜ 'ਤੇ ਦਿੱਤਾ ਜ਼ੋਰ

ਬੇਟੀਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਣ 'ਤੇ ਦਿੱਤਾ ਜ਼ੋਰ

ਸਵੱਛਤਾ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਵੀ ਕੀਤੀ ਸ਼ਲਾਘਾ

ದೇಶಿ ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಬೇಡಿಕೆ ಹೆಚ್ಚಳ: ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ

ಸ್ಥಳೀಯ ಉತ್ಪನ್ನ ಬೇಗ ಜಾಗತಿಕ ಮಟ್ಟ ತಲುಪುತ್ತಿವೆ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में उद्यमियों की मेहनत को सराहा

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम शुरुआत में पिछले हफ्ते हासिल किए गए 30 लाख करोड़ के एक्सपोर्ट लक्ष्य का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सुनने में यह खबर व्यापार की लगती है, लेकिन वास्तव में इसका संबंध हर भारतीय से है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत की यह ऐतिहासिक उपलब्धि बताती है कि दुनिया में भारत के उत्पादों की मांग बढ़ रही है, यह किसानों, कारिगरों, इंजीनियरों, उद्यमियों एमएसएमई सेक्टर की मेहनत का फल है। उन्होंने कहा कि यह भारत का सामर्थ्य है कि देश के लोकल उत्पाद दुनिया के हर हिस्से में मिल रहे हैं। एक समय में भारत से एक्सपोर्ट का आंकड़ा कभी 100 बिलियन कभी डेढ़-सौ बिलियन तक हुआ करता था। आज भारत 400 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अब छोटे से छोटा दुकानदार भी जीइएम पोर्टल पर सरकार को अपना सामान बेच सकता है, यही तो नया भारत है। उन्होंने कहा कि ये न केवल बड़े सपने देखता है, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुंचने का साहस भी दिखाता है।

इसी साहस के दम पर सभी भारतीय मिलकर आत्मनिर्भर भारत का सपना भी जरुर पूरा करेंगे।

ಭಾರತೀಯ ಉತ್ಪನ್ನಗಳ ಘನತೆ ಹೆಚ್ಚಿಸಿ

ಲೋಕಲ್ ಗ್ಲೋಬಲ್ ಆಗಲಿ | ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ

ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಮಾತುಗಳ ಸಾರ

'మన్ కీ బాత్'లో మన బన్సీలాల్‌పేట్ మెట్లబావి

வெளிநாடுகளில் இந்திய பொருட்களுக்கு கிராக்கி

₹30 லட்சம் கோடிக்கு ஏற்றுமதி செய்து சாதனை

ஒவ்வொரு துளி தண்ணீரையும் சேமிக்க பிரதமர் மோடி அழைப்பு

রফতানিতে রেকর্ড, অভিনন্দন প্রধানমন্ত্রীর

'लोकल' करा 'ग्लोबल'

भारतीय उत्पादनांबाबत पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे आवाहन

Outlook

'Let's Make Local Global': PM Modi Hails Indian Products In 'Mann Ki Baat'

DH DECCAN HERALD

Kerala man's pots for birds initiative receives PM Modi's praise

THE ECONOMIC TIMES

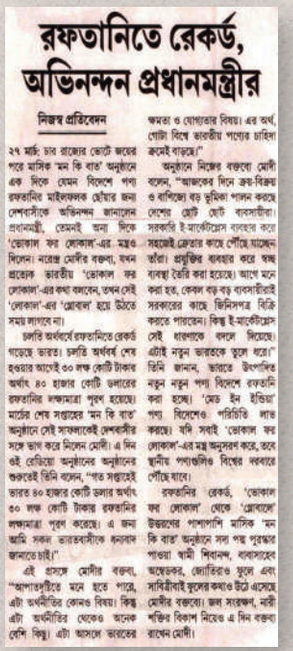

Mann ki Baat: Prime Minister Modi calls for adopting of water conservation efforts

NDTV

PM Modi Calls For Adopting Of Water Conservation Efforts

FINANCIAL EXPRESS
Read to Lead

PM Modi: Close to 1.25 lakh small entrepreneurs, shopkeepers have sold goods directly to govt via GeM

THE HINDU

PM Modi lavishes praise on Nizam-era stepwell in Bansilalpet

THE TIMES OF INDIA

PM Modi praises Odia youth for cleaning plastic garbage

REPUBLICWORLD.COM

Mann Ki Baat: PM Modi Lauds Men Guarding River Against Garbage & Plastic Waste At Temples

ZEE उत्तर प्रदेश उत्तराखंड

पद्मश्री सम्मानित 126 वर्षीय बाबा शिवानंद ने बताई PM मोदी को प्रणाम करने की वजह, गिनाए योग के लाभ

NBT नवभारत टाइम्स

प्रधानमंत्री मोदी ने की बावड़ियों के संरक्षण के लिए महाराष्ट्र के एचआर पेशेवर के जुनून की तारीफ

abp LIVE

PM Modi Mann Ki Baat: देशाने 30 लाख कोटींची निर्यात करत 400 अब्ज डॉलर्सचे लक्ष्य गाठलं: पंतप्रधान मोदी

आज तक

PM Modi Mann ki Baat: भारत ने प्राप्त किया 30 लाख करोड़ के ऐतिहासिक निर्यात का लक्ष्य